नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 092
दि. 03.01.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

महाराष्ट्र निकाय चुनाव से पहले महायुति का दबदबा, 50 से अधिक उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित, विपक्ष में हड़कंप

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र में होने वाले महानगरपालिका चुनावों के लिए अभी मतदान होना बाकी है, लेकिन उससे पहले ही सियासी तस्वीर काफी हद तक साफ होती नजर आ रही है। सत्ताधारी महायुति ने नामांकन वापसी के चरण में ऐसा दबदबा बनाया है कि राज्य भर में 50 से अधिक उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित घोषित हो चुके हैं। भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना (शिंदे गुट) को मिली इन शुरुआती जीतों ने गठबंधन के खेमे में उत्साह भर दिया है, वहीं विपक्षी दलों में बेचैनी और असंतोष साफ दिखाई दे रहा है।

ठाणे महानगरपालिका में महायुति को सबसे बड़ी शुरुआती सफलता मिली है। यहां शिवसेना (शिंदे गुट) के सात उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। खास बात यह रही कि इनमें छह महिलाएं शामिल हैं, जिससे पार्टी ने महिला प्रतिनिधित्व को लेकर भी सकारात्मक संदेश देने की कोशिश की है। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और परिवहन मंत्री प्रताप सरनाइक के प्रभाव वाले इलाकों में यह जीत हुई है। वार्ड 18 से जयश्री फाटक, सुखदा मोरे और राम रेपाले निर्विरोध चुने गए। सावरकरनगर, किसाननगर और वर्तकनगर जैसे इलाकों में भी विपक्षी उम्मीदवारों के नाम वापस लेने से शिंदे गुट के प्रत्याशियों का रास्ता साफ हो गया। हालांकि एक-दो वार्डों में विपक्ष ने आखिरी समय तक मुकाबले की कोशिश की, लेकिन समग्र रूप से ठाणे में महायुति का पलड़ा भारी रहा।

भिवंडी महानगरपालिका में भारतीय जनता पार्टी ने सामाजिक समीकरणों के साथ बड़ी बढ़त बनाई है। यहां अब तक भाजपा के छह उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हो चुके हैं। इनमें एक अल्पसंख्यक मुस्लिम उम्मीदवार का निर्विरोध चुना जाना खास तौर पर चर्चा में है। प्रभाग 18A, 18B, 18C, 16A

और 23B सहित कई इलाकों में विपक्षी उम्मीदवारों के हटने से भाजपा को यह बढ़त मिली। पार्टी नेताओं का दावा है कि विकास कार्यों और संगठन की मजबूती के कारण विपक्ष खुद ही मैदान छोड़ रहा है।

कल्याण-डोंबिवली महानगरपालिका चुनाव में तो महायुति ने इसे अपना 'मास्टरस्ट्रोक' बताया है। यहां नामांकन वापसी के अंतिम दिन बड़ा राजनीतिक उलटफेर देखने को मिला। शिवसेना (उद्धव गुट), मनसे, कांग्रेस, एनसीपी (दोनों गुट) और अन्य दलों के कुल 21 उम्मीदवारों ने अपने नामांकन वापस ले लिए। नतीजतन भाजपा के 14 और शिवसेना (शिंदे गुट) के 6 उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हो गए। कुल मिलाकर 20 पार्षद चुनाव से पहले ही महायुति के खाते में चले गए। इस घटनाक्रम को विपक्ष के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है, क्योंकि KDMC जैसे शहरी क्षेत्र में पहले मुकाबला कड़ा माना जा रहा था।

जलगांव महानगरपालिका में भी भाजपा और शिवसेना (शिंदे गुट) ने बराबरी की जीत दर्ज की है। यहां दोनों दलों के 6-6 उम्मीदवार निर्विरोध चुने गए हैं। कई प्रभागों में ठाकरे गुट, शरद पवार गुट और मनसे के उम्मीदवारों के नाम वापस लेने से यह स्थिति बनी। जीत की घोषणा के बाद भाजपा और शिवसेना कार्यकर्ताओं ने नगर निगम कार्यालय के बाहर जमकर जश्न मनाया और इसे महायुति की एकजुटता का नतीजा बताया।

धुले में भाजपा ने लगातार निर्विरोध जीत दर्ज कर 'जीत का चौका' लगाया है। यहां चार उम्मीदवार बिना मुकाबले निर्वाचित हो चुके हैं। मंत्री जयकुमार रावल ने दावा किया कि विपक्षी उम्मीदवार खुद फोन कर नाम वापस ले रहे हैं और आने वाले दिनों में यह संख्या और बढ़ सकती है। पुणे महानगरपालिका में भी भाजपा ने अपना खाता खोल लिया है, जहां प्रभाग क्रमांक 35 से मंजुषा नागपुरे निर्विरोध निर्वाचित हुई हैं। इसी तरह अहिल्यानगर में पुष्पा अनिल बोरुडे भाजपा की पहली निर्विरोध निर्वाचित महिला उम्मीदवार बनी हैं। हालांकि महायुति की इन निर्विरोध जीतों पर विपक्ष ने गंभीर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस, जनता दल (एस), आम आदमी पार्टी और अन्य दलों ने आरोप लगाया है कि कई जगह उम्मीदवारों पर दबाव बनाकर या नामांकन प्रक्रिया में कथित गड़बड़ी कर उन्हें पीछे हटने पर मजबूर किया गया। खासकर मुंबई के कोलाबा इलाके के कुछ वार्डों को लेकर शिकायतें सामने आई हैं। इन आरोपों को गंभीरता से लेते हुए राज्य चुनाव आयोग ने जांच के संकेत दिए हैं। आयोग ने उन नगर निगमों से रिपोर्ट मांगी है जहां उम्मीदवार निर्विरोध चुने गए हैं। आयोग यह जांच करेगा कि कहीं नामांकन वापस लेने के लिए दबाव, लालच या किसी तरह की जबरदस्ती तो नहीं की गई। नामांकन वापसी की अंतिम तारीख के बाद रिटर्निंग अधिकारियों, नगर आयुक्तों और पुलिस आयुक्तों से विस्तृत रिपोर्ट तलब की जाएगी।

कुल मिलाकर, महाराष्ट्र निकाय चुनाव से पहले ही सियासी माहौल गर्म हो चुका है। एक तरफ महायुति इसे जनसमर्थन और संगठनात्मक मजबूती का प्रमाण बता रही है, वहीं विपक्ष इसे लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर सवाल खड़ा करने वाला कदम मान रहा है। अब निगाहें राज्य चुनाव आयोग की जांच और आने वाले मतदान पर टिकी हैं, जो यह तय करेगा कि यह शुरुआती बढ़त चुनावी नतीजों में कितनी तब्दील हो पाती है।

शनिवार रात सुपरमून का दीदार: पृथ्वी-सूर्य-चंद्रमा का अनोखा संगम

(जीएनएस)। भोपाल। खगोल विज्ञान के शौकीनों के लिए शनिवार, 3 जनवरी 2026 की रात एक अद्भुत खगोलीय घटना लेकर आ रही है। इस रात पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा एक विशेष नजदीकी स्थिति में होंगे। चंद्रमा पृथ्वी के सबसे नजदीक आकर लगभग सुपरमून जैसा बड़ा और चमकदार दिखाई देगा, जबकि पृथ्वी सूर्य के पेरिहेलियन बिंदु पर पहुंचेगी, यानी अपने परिक्रमा पथ में सूर्य के सबसे पास होगी। मध्य प्रदेश की नेशनल अवार्ड विजेता विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने बताया कि खगोलीय पिंड अपनी कक्षाओं में अंडाकार पथ पर चलते हैं, जिसके कारण कभी-कभी वे एक-दूसरे से अधिक निकट और कभी दूर होते हैं। 3 जनवरी को पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी लगभग 14 करोड़ 70 लाख किलोमीटर होगी, जो जुलाई में बढ़कर 15 करोड़ 20 लाख किलोमीटर हो जाती है।

सारिका के अनुसार, सोशल मीडिया पर इसे 'वुल्फ सुपरमून' कहा गया है। हालांकि, खगोल विज्ञान की दृष्टि से यह पूरी तरह सुपरमून नहीं है, क्योंकि चंद्रमा 1 जनवरी को पृथ्वी के सबसे नजदीक था। शनिवार रात की पूर्णिमा में चंद्रमा मिथुन राशि में रहेगा और पृथ्वी से लगभग 3 लाख 62 हजार किलोमीटर दूर चमकेगा। इस दुर्लभ खगोलीय संयोग के साथ नववर्ष 2026 का स्वागत खगोल प्रेमियों के लिए यादगार अनुभव साबित होगा।

विशेष रूप से खगोलशास्त्रियों का कहना है कि पृथ्वी-सूर्य-चंद्रमा का यह संयोग आकाशीय पिंडों की गति और गुरुत्वाकर्षण के आकर्षण का अद्भुत उदाहरण है। ऐसे मौकों पर चंद्रमा अपनी सामान्य चमक से अधिक दिखाई देता है, और इसे देखने के लिए रात के साफ मौसम की आवश्यकता होती है।

सारिका ने यह भी बताया कि असली सबसे बड़ा और चमकीला सुपरमून इस वर्ष 24 दिसंबर 2026 को दिखाई देगा। इस रात चंद्रमा का आकार और चमक शनिवार की रात की तुलना में अधिक प्रभावशाली होगी। खगोल विज्ञान में इसे 'सुपरमून' कहा जाता है, जब पूर्णिमा का चंद्रमा पृथ्वी के सबसे नजदीक होता है।

दृश्यता की बात करें तो भारत में चंद्रमा शाम को उदित होगा और रातभर आकाश में दिखाई देगा। यदि मौसम साफ रहेगा, तो रात के 7 बजे के बाद इसे आसानी से देखा जा सकेगा। एशिया के कई देशों जैसे पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, चीन, जापान और थाईलैंड में भी यह अद्भुत नजारा देखा जा सकेगा।

यूरोप के फ्रांस, जर्मनी, यूके, इटली, स्पेन, और पूर्वी एवं मध्य अमेरिका के कई हिस्सों में भी सूर्यास्त के बाद यह दृश्य दिखाई देगा। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में भी रातभर चंद्रमा का चमकता हुआ रूप देखा जा सकेगा।

विशेष उपकरणों से देखने पर यह दृश्य और भी शानदार दिखाई देगा। टेलिस्कोप या दूरबीन के माध्यम से चंद्रमा की सतह पर मौजूद गड्ढों, पहाड़ियों और घाटियों को साफ देखा जा सकता है। खगोल प्रेमियों के लिए यह रात न केवल सुपरमून का आनंद देने वाली होगी, बल्कि वे आकाशीय पिंडों की गति, उनके आकार और दूरी का अनुभव भी कर सकेंगे।

इस अवसर पर खगोलविद और उत्साही लोग रातभर सितारों की स्थिति और ग्रहों की चाल पर भी नजर रख सकते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह खगोलीय संगम विज्ञान और मनोरंजन दोनों के लिए आदर्श अवसर है। शनिवार रात का सुपरमून इसलिए विशेष है क्योंकि यह पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा के सबसे नजदीक आने का अद्भुत संगम पेश करेगा, जिससे खगोल विज्ञान प्रेमियों को एक बार फिर प्रकृति के रहस्यों के करीब होने का अवसर मिलेगा।

अगर आप इस रात को अपने शहर के खुले मैदान, छत या किसी उच्च स्थान से देखें, तो चंद्रमा का बड़ा आकार और उसकी चमक आपके अनुभव को और भी अविस्मरणीय बना देगी। यह मौका साल में केवल एक बार ही आता है, इसलिए खगोल प्रेमियों को इसे अनदेखा नहीं करना चाहिए।

बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट में बड़ी उपलब्धि, पालघर की दूसरी सुरंग का काम पूरा

(जीएनएस)। नई दिल्ली/पालघर। भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना मुंबई–अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर (MAHSR) ने एक और महत्वपूर्ण मुकाम हासिल कर लिया है। शुक्रवार, 2 जनवरी 2026 को महाराष्ट्र के पालघर जिले में 1.5 किलोमीटर लंबी माउंटेन टनल-5 (MT-5) का खुदाई कार्य पूरी तरह संपन्न हो गया। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली स्थित रेल भवन से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस सुरंग के अंतिम ब्रेकथ्रू को देखा और परियोजना से जुड़े इंजीनियरों व अधिकारियों को बधाई दी। यह सुरंग विरार और बोइसर स्टेशनों के बीच स्थित है और पालघर जिले की सबसे लंबी पहाड़ी सुरंगों में गिनी जा रही है। परियोजना से जुड़े अधिकारियों के अनुसार, इस सुरंग के पूरा होने से मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन रूट के महाराष्ट्र खंड में एक अहम बाधा दूर हो गई है। पहाड़ी और चुनौतीपूर्ण भूगोल के कारण इस हिस्से को तकनीकी दृष्टि से सबसे कठिन माना जा रहा था।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस अवसर पर कहा कि यह उपलब्धि केवल एक सुरंग का निर्माण पूरा होना नहीं है, बल्कि भारत की इंजीनियरिंग क्षमता और आधुनिक तकनीक के सफल उपयोग का प्रमाण है।

उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में यह दूसरी बड़ी सुरंग है, जिसका काम सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। इससे पहले सितंबर 2025 में ठाणे और बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) के बीच लगभग 5 किलोमीटर लंबी भूमिगत सुरंग का निर्माण पूरा हुआ था। MT-5 सुरंग के पूरा होने के साथ ही ठाणे से अहमदाबाद तक बुलेट ट्रेन के पूरे कॉरिडोर का तकनीकी खाका अब स्पष्ट हो गया है। परियोजना अधिकारियों ने बताया कि MT-5 सुरंग का निर्माण आधुनिक 'ड्रिल एंड ब्लास्ट' तकनीक के जरिए किया गया है। इस पद्धति में अत्याधुनिक मशीनों, नियंत्रित विस्फोटों और सटीक इंजीनियरिंग का इस्तेमाल किया गया, ताकि पहाड़ों के बीच सुरंग निर्माण सुरक्षित और तेज गति से हो सके। मात्र 18 महीनों में इस सुरंग की खुदाई पूरी कर लेना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, क्योंकि इस दौरान भूगर्भीय संरचना, पानी के रिसाव और पर्यावरणीय संतुलन जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रेल मंत्रालय के अनुसार, बुलेट ट्रेन परियोजना में सुरक्षा और गुणवत्ता से किसी तरह का समझौता नहीं किया जा रहा है। हर चरण में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार जांच और निगरानी की जा रही है। MT-5 सुरंग के निर्माण में जापानी तकनीकी सहयोग और भारतीय इंजीनियरों की संयुक्त विशेषज्ञता का लाभ लिया गया है। यही कारण है कि कठिन भूभाग होने के बावजूद समयसीमा के भीतर काम पूरा किया जा सका।

पालघर जिले में सुरंग का काम पूरा होने से स्थानीय स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। परियोजना के दौरान बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों को रोजगार मिला और भविष्य में बुलेट ट्रेन के संचालन से इस क्षेत्र में विकास, निवेश और पर्यटन को बढ़ावा मिलने की संभावना है। अधिकारियों का कहना है कि हाई-स्पीड रेल नेटवर्क से मुंबई और अहमदाबाद के बीच यात्रा का समय काफी कम हो जाएगा, जिससे व्यापार और औद्योगिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

रेल मंत्री ने यह भी संकेत दिए कि आने वाले महीनों में परियोजना के अन्य महत्वपूर्ण हिस्सों पर भी तेजी से काम पूरा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार इस परियोजना को देश के आधुनिक परिवहन ढांचे का प्रतीक मानती है और इसे तय समय में पूरा करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है।

कुल मिलाकर, पालघर की दूसरी पहाड़ी सुरंग का पूरा होना न केवल बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए, बल्कि भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के सफर में भी एक अहम मील का पत्थर साबित हो रहा है।

छोटे शहरों के सर्वांगीण विकास से 'विकसित गुजरात@2047' के विजन की ओर लंबी छलांग

राज्य में 5 सैटेलाइट टाउन के मास्टर प्लान बनाने के लिए अर्बन प्लानर्स को आमंत्रण

(जीएनएस)। गांधीनगर, 02 जनवरी : वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने तथा भारत के सभी राज्यो के सर्वांगीण विकास को वेग देने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने टियर-2 व टियर-3 शहरों के रणनीतिक विकास को गति देने का विजन प्रस्तुत किया है। इस विजन के अनुरूप राज्य में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में अक्टूबर-2025 में पाँच सैटेलाइट टाउन विकसित करने का निर्णय किया गया है। इस निर्णय के क्रियान्वयन के हिस्से के रूप में अब इन शहरों के मास्टर प्लान तैयार करने के लिए अर्बन प्लानर्स को आमंत्रित किया गया है। इसके लिए टेंडर द्वारा अर्बन प्लानर्स की नियुक्ति करने का कार्य शुरू किया गया है। वर्ष 2030 तक इन शहरों में महानगरों जैसी सुविधाएँ विकसित कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का आयोजन है, जिससे बड़े शहरों पर बोझ को घटाया जा सके। शहरी विकास वर्ष-2025 में 'अर्निंग वेल-लिविंग वेल' का मंत्र साकार करने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने अहमदाबाद के पास सानंद, वडोदरा के पास सावली, गांधीनगर के पास कलोल, सूरत के पास बारडोली तथा राजकोट के पास हीरासर को 'सैटेलाइट टाउन' के रूप में विकसित करने का निर्णय किया है। राज्य सरकार ने प्रस्ताव करके राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुभव प्राप्त अर्बन प्लानर्स को मास्टर प्लान तैयार करने के लिए आमंत्रित किया है। आगामी दो महीनों में कन्सल्टेंट की नियुक्ति की जाएगी, जो एक वर्ष के भीतर इन शहरों के लिए मास्टर प्लान तैयार करके प्रस्तुत करेंगे।

2030 तक सानंद, कलोल, सावली, बारडोली तथा हीरासर को सैटेलाइट टाउन के रूप में विकसित किया जाएगा
अर्बन एरिया देश का ग्रोथ सेंटर है, विकसित भारत के निर्माण के लिए शहरों को आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बनाना होगा : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

अर्बन एरिया देश का ग्रोथ सेंटर है : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

शहरी विकास के विजन को प्रस्तुत करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है, "अर्बन एरिया देश का ग्रोथ सेंटर है, तब विकसित भारत के निर्माण के लिए शहरों को आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहिए और टारगेट निर्धारित कर उस अनुसार नए उत्पादनों तथा क्वॉलिटी वर्क पर कार्य कर विकास साधना चाहिए। आज देश में दो लाख से अधिक स्टार्टअप कार्यरत हैं, जिनमें अधिकांश स्टार्टअप टियर-2 व टियर-3 शहरों में स्थित हैं। इनमें अनेक स्टार्टअप का नेतृत्व बेटियाँ कर रही हैं। इतना ही नहीं; इन शहरों के बच्चे शिक्षा के अलावा अन्य अनेक गतिविधियों में भी अपेक्षाकृत आगे हैं। इसलिए ऐसे छोटे शहरों में विकास की अनेक क्षमताएँ विद्यमान हैं।"

गुजरात के पाँच सैटेलाइट टाउन

राज्य सरकार ने प्रारंभिक चरण में अहमदाबाद के पास सानंद, वडोदरा के पास सावली, गांधीनगर के पास कलोल, सूरत के पास बारडोली तथा राजकोट के पास हीरासर को 'सैटेलाइट टाउन' के रूप में विकसित करने का निर्णय किया है। इन पाँच शहरों में मास्टर टाउन प्लानिंग के साथ परिवहन, उद्योगों, पर्यटन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य से संबंधित सुविधाएँ विकसित की जाएंगी।

सैटेलाइट टाउन में विकसित होने वाली सुविधाएँ

सैटेलाइट टाउन में अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, सुव्यवस्थित सार्वजनिक परिवहन सुविधा (इलेक्ट्रिक बस सुविधा सहित), जलापूर्ति तथा वेस्ट मैनेजमेंट के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर, रिंग रोड, अर्बन फॉरेस्ट पार्क, सुंदर तालाब, मॉडल फायर स्टेशन तथा मिक्स यूज इन्फ्रास्ट्रक्चर (ऑफिस, घर, दुकानें; सब नजदीक में) का निर्माण किया जाएगा। इन सुविधाओं का कार्य तेजी से शुरू करने के लिए मंजूरी तथा निगरानी समिति का गठन किया गया है।

क्या है सैटेलाइट टाउन ?

सैटेलाइट टाउन यानी बड़े शहर या महानगर के निकट स्थित ऐसा शहर, जहाँ बड़े शहर से एक घण्टे में पहुँचा जा सकता है। ऐसे शहरों की पहचान कर उन्हें आर्थिक रूप से व्यस्त गतिविधियों का केन्द्र बनाने का उद्देश्य है, जिससे बड़े शहरों पर बोझ घटे और इन शहरों में रोजगार के अवसर के द्वार खुलें। इन शहरों में विश्व स्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा नागरिक केन्द्रित सुविधाएँ विकसित की जाएंगी।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

गिग-वर्कर्स की मांगों को गंभीरता से लें

बाजार आने-जाने के झंझट से बचा लोगों के घरों में तुरत-फुरत जीवन उपयोगी सामान पहुंचाने वाले गिग-वर्कर्स की जटिल कार्यपरिस्थितियां और पसीने का मोल न मिलना, बेहद चिंता की बात है। अपना व परिवार का पोषण करने वाले ये युवा अकसर सरपट मोटरसाइकिल दौड़ाते और सीढ़ियां चढ़कर ऊंची मंजिलों में दरवाजों तक सामान पहुंचाते देखे जा सकते हैं। बेहद कम मेहनताने, कंपनी मालिकों के दबाव व ग्राहकों की उपेक्षा झेलते गिग वर्कर्स ने नये साल की पूर्व संध्या पर हड़ताल करके अपनी बदहाली को ही उजागर किया है। संवेदनशील कार्य परिस्थितियों और नौकरी की असुरक्षा के चलते गिग-वर्कर्स हड़ताल पर थे। हालांकि, नये साल पर काम के दबाव व पूरी तरह संगठित न होने के कारण इनकी हड़ताल का कुछ ही इलाकों में असर देखा गया। पूरे देश में सामान की आपूर्ति बाधित हुई हो, ऐसा भी कोई समाचार नहीं मिला है। लेकिन गिग-वर्कर्स की विषम कार्य-परिस्थितियों की ओर पूरे देश का ध्यान जरूर गया है। पिछले दिनों आप के राघव चड्ढा और राजद के मनोज कुमार झा जैसे सांसदों ने गिग वर्कर्स के शोषण का मुद्दा संसद में उठाया था। निस्संदेह, देश की गिग अर्थव्यवस्था ने रोजगार सृजन में अपनी क्षमता साबित की है। विडंबना है कि भारत युवाओं को देश का कहा जाता है, लेकिन हम उनकी आकांक्षाओं का रोजगार नहीं दे पा रहे हैं। दरअसल, गिग-वर्कर्स की प्रमुख मांग है कि उनके काम का बेहतर भुगतान हो और उनके लिये बेहतर कामकाजी परिस्थितियां बनायी जाएं। उनकी इस हड़ताल ने इन मुद्दों पर देश का ध्यान खींचा है। लेकिन देश के प्रमुख खाद्य वितरण करने वाली कंपनी ने 31 दिसंबर को इस हड़ताल के बावजूद ऑर्डर में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की। वहीं थके-हारे बाइकर्स अपनी अनगिनत शिकायतें व्यक्त करते रहे। दरअसल, विडंबना यह है कि खूब काम लेने के बावजूद गिग-वर्कर्स को पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी के दायरे से बाहर आजीविका कमाने वाले व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है।

दरअसल, गिग-वर्कर्स को नई अर्थव्यवस्था में नियोक्ता एक कर्मचारी के रूप में नियुक्त करने के दायित्व से बचने का प्रयास करते हैं। लेकिन नियोक्ताओं की हायर व फायर की रणनीति के चलते, वे असुरक्षित कार्य परिस्थितियों में काम करने को बाध्य होते हैं। इसके बावजूद वे आज शहरी जीवन व्यवस्था के लिये अभिन्न अंग बन गए हैं। लोगों की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए दौड़ते रहते हैं। वे सामान दस मिनट तक दरवाजे पर पहुंचाने के दबाव में हांफते-भागते, मोटरसाइकिल दौड़ाते और सीढ़ियों पर सामान चढ़ाते अकसर नजर आते हैं। आम तौर पर उपभोक्ताओं का व्यवहार भी अच्छा नहीं होता। देरी होने पर इन्हें झिड़का जाता है। सामान में नुक्स निकालकर इन्हें दौड़ाया जाता है। आज भारत में इनकी संख्या सवा करोड़ से अधिक है। अनुमान है कि वर्ष 2030 तक इन कामगारों की संख्या दो करोड़ पैंतीस लाख तक हो सकती है। निश्चित रूप से आने वाले वर्षों में इस क्षेत्र की अनदेखी नहीं की जा सकती। लेकिन फिलहाल स्थिति यह है कि मेहनताने में कटौती, जरा सी चूक पर आर्थिक दंड तथा समय से पहले पहुंचाने के दबाव से गिग-वर्कर्स त्रस्त हैं। मुश्किल परिस्थितियों में काम करते रहने के बावजूद ये कामगार हड़ताल में बड़ी संख्या में भाग नहीं ले पाये। दरअसल, प्लेटफॉर्म अकसर प्रोत्साहन और अतिरिक्त वेतन के जरिये श्रमिकों के विरोध प्रदर्शन को दबा देते हैं। निश्चित रूप से गिग-वर्कर्स का लगातार 14 घंटे काम करने के बावजूद सात-आठ सौ रुपये कमाना और दुर्घटना बीमा से वंचित रखना, इस व्यवस्था की उन खामियों की ओर भी इशारा करता है, जिन्हें केवल फौरी लालच या प्रोत्साहन से ठीक नहीं किया जा सकता। ऐसे में हालिया श्रम सुधारों का महत्व बढ़ जता है। जिसमें पहली बार, गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को कानून के तरह औपचारिक रूप से परिभाषित किया गया है। एग्रीगेटर के टर्नओवर का एक से दो फीसदी सामाजिक सुरक्षा कोष में अनिवार्य योगदान और आधार से जुड़े सार्वभौमिक खाता नंबर को कानूनी मान्यता की दिशा में एक लंबे समय से प्रतीक्षित बदलाव का संकेत देते हैं। हालांकि, कार्यान्वयन ही यह निर्धारित करेगा कि ये सुधार परिवर्तनकारी साबित होते हैं या केवल प्रतीकात्मक रहते हैं।

अदावत को दोस्ती में बदलने की कूटनीतिक पहल

> "विश्लेषकों ने माना है, कि एस. जयशंकर को ढाका भेजने का फैसला कूटनीतिक परिपक्वता का परिचायक है। एस. जयशंकर ढाका जितने समय थे, उन्होंने मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस से मिलने की जहमत नहीं

जमात-ए-इस्लामी के अमीर शफीकुर रहमान ने भारतीय राजनयिकों के साथ मुलाक़ात की बात मानी है। यह ख़बर जंगल में आग की तरह फैली है। बांग्लादेश स्थित जमात-ए-इस्लामी को भरोसे में लेने की ज़रूरत और भारतीय विदेशमंत्री एस. जयशंकर का पूर्व प्रधानमंत्री ख़ालिदा ज़िया के जनाजे में शामिल होना, ये दो घटनायें सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस को असहज किये हुए है। मोहम्मद यूनुस चुनाव तक बांग्लादेश में बतौर 'गेस्ट आर्टिस्ट' हैं, बाद के दिनों में वो राष्ट्रपति बनेंगे, या मार्गदर्शक मंडल में शामिल होंगे? यह सवाल अधर में लटका पड़ा है। रॉयटर्स के साथ एक इंटरव्यू में, जमात अमीर ने कहा कि जब मैं बीमार था, जैसे दूसरे देशों के राजनयिक मुझसे मिलने आए, वैसे ही दो भारतीय राजनयिक भी कुशल-क्षेम के वास्ते मेरे घर आए थे। मैंने उनसे वैसे ही बात की, जैसे दूसरों से की थी।

जमात-ए-इस्लामी के अमीर शफीकुर रहमान ने कहा, 'भारतीय राजनयिकों ने अनुरोध किया कि इस दौरे को सार्वजनिक न किया जाए। आगे भी दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय हितों से जुड़ी भविष्य की कोई भी बैठक की जानकारी सार्वजनिक नहीं की जाएगी।' जमात प्रमुख शफीकुर रहमान ने पुष्टि की, कि मैंने अपनी बाईपास सर्जरी के बाद सितम्बर, 2025 की शुरुआत में एक भारतीय राजनयिक से मुलाकात की थी। अब सवाल यह है, कि क्या जमात लीडरशिप बीएनपी नेताओं के सम्बन्ध भारत के साथ सॉफ्ट करने में कोई भूमिका निभा रही है? यह भी एक क़िस्म की 'पोलिटिकल बाईपास सर्जरी' है, जिससे मुहम्मद यूनुस के रणनीतिकार अनजान थे।

जमात ने आखिरी बार 2001 और 2006 के बीच बीएनपी के साथ एक जूनियर गठबंधन सहयोगी के रूप में सत्ता संभाली थी, और वह फिर से उसके साथ काम करने के लिए तैयार है। बाहर से यही दिख रहा था कि भारत विरोधी माहौल बनाने में जमात पाकिस्तान के इशारों पर यह सबकुछ कर रहा था, लेकिन अब वो क्यास कथा पलटती दिख रही है। बांग्लादेश में हिन्दू विरोधी माहौल से देश, और देश से बाहर किस-किस को फायदा मिलता है? इस बारे में डिप्लोमेट तो खुलकर बोलेंगे नहीं, लेकिन यह विश्लेषण का विषय है। बुधवार को, जिस तरह का हुजूम बेग़म ख़ालिदा ज़िया के जनाजे में दिखा, वो इस बात का संकेत है कि बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) एक बार फिर सियासी पारी खेल सकती है। सबका यही अनुमान था कि चुनाव तक बांग्लादेश में जो पार्टियां मैदान में हैं, वो हिन्दुओं को निशाने पर लेते हुए, भारत विरोधी विष वमन करेंगी। लेकिन, किसी ने सोचा नहीं था कि इस बीच बीएनपी की सर्वोच्च नेता ख़ालिदा जिया को सिपुर्द-ए-खाक़ करने की सूरत बन आएगी, और भारतीय विदेशमंत्री शोक और दोस्ती का पैगाम लेकर ढाका जायेंगे।

विश्लेषकों ने माना है, कि एस. जयशंकर को ढाका भेजने का फैसला कूटनीतिक परिपक्वता का परिचायक है। एस. जयशंकर ढाका जितने समय थे, उन्होंने मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस से मिलने की ज़हमत नहीं उठाई। इससे साफ़ संदेश जा रहा था, कि भारत सरकार की दिलचस्पी देश के अस्थायी व्यस्थापक में कतई नहीं है। पीएम मोदी अदावत को दोस्ती में बदलने की कला में माहिर राजनेता हैं। उसका एक और उदाहरण बुधवार को देखने को मिल गया। जून, 2015 में बांग्लादेश यात्रा के दौरान, मोदी ने खालिदा ज़िया से मुलाकात की, जो उस समय विपक्ष की नेता थीं। दोनों पक्षों ने बातचीत को सकारात्मक बताया, मोदी ने बाद में इसे एक 'गर्मजोशी भरी मुलाकात' के रूप में याद किया। उसी मुलाक़ात का हवाला मोदी के पत्र में था, जो उनके बेटे और बीएनपी के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान को अपने विदेशमंत्री के माध्यम से भेजा था।

बांग्लादेश से भारत के सम्बन्ध उतार-चढ़ाव वाले ही रहे हैं। सैन्य शासन के पंद्रह साल की अवधि के दौरान, भारत और बांग्लादेश ने एक-दूसरे को बड़े पैमाने पर सुरक्षा अनिश्चितता की दृष्टि से देखना शुरू किया था। दोनों देशों ने एक-दूसरे के क्षेत्र में विद्रोहियों को गुप्त समर्थन दिया। नई दिल्ली ने बांग्लादेश के चटगांव हिल ट्रैक्ट्स में शांति वाहिनी का समर्थन किया। इस बीच, ढाका ने भारत के उत्तर-पूर्व में विद्रोहियों को हथियारों की खेप पहुंचाने में मदद की, और उन्हें बांग्लादेशी धरती पर शिविर स्थापित करने की अनुमति दी।

ज़िया की बीएनपी सरकार को भी भारत विरोधी ही माना जाता था। उनके कार्यकाल में पाकिस्तान और चीन के साथ रक्षा सौदों को बढ़ावा दिया गया, जो भारत के लिए चिंता का विषय था। उन्होंने भारतीय ट्रकों के लिए बांग्लादेश से होकर जाने वाले ट्रांजिट को 'गुलामी' बताया और पूर्वोत्तर राज्यों तक पहुंचने के लिए भारत को ट्रांजिट अधिकार देने से इनकार कर दिया। खालिदा जिया पर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के उग्रवादी समूहों को पनाह देने, और आईएसआई के साथ सांठगांठ के आरोप लगे। बेग़म ज़िया ने 1972 की भारत-बांग्लादेश मैत्री संधि और 1996 की गंगा जल संधि को 'गुलामी की संधि' और 'गुलामी का सौदा' करार दिया था।

सबके बावजूद, शेख हसीना से दोस्ती के पुराने दिन याद करने का कोई मतलब नहीं रह गया। अब वो नई दिल्ली के लिए गले की हड्डी बन चुकी हैं। इस बार अवामी लीग को चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया है। अर्थात, बांग्लादेश में भारत के लिए अवामी लीग के रूप में कोई विकल्प नहीं है। ऐसे में बांग्लादेश की राजनीति में जो विकल्प दिखते हैं, उन्हीं के साथ भारत को संबंध दुरुस्त करने होंगे। डिप्लोमेटिक सूत्र इस बात की पुष्टि करते हैं, कि भारतीय राजनयिकों ने लंदन प्रवास के दौरान बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी के नेता तारिक रहमान के साथ अनौपचारिक संपर्क बना रखा था। इसलिए एस. जयशंकर का ढाका जाना, आपदा में अवसर जैसा ही था।

बीएनपी नेता तारिक़ रहमान के लन्दन से लौटने के बाद, जितनी तेज़ रफ्तार से सियासी मौसम में बदलाव आया है, उससे मुहम्मद यूनुस की सरपरस्ती वाले छात्र नेता असमंजस में हैं। छात्र नेता नाहिद इस्लाम ने 28 फरवरी, 2025 को नेशनल सिटीजन पार्टी की स्थापना की थी। नाहिद की नेशनल सिटीजन पार्टी सत्ता में आने के सपने देखने लगी थी। संभवतः इनके लिए ही मुहम्मद यूनुस ने दिसंबर के बदले दो माह आगे चुनाव टाल दिया था। कहने को जमात से जुड़ा 'इस्लामी छात्र शिबिर' के नेता अबू शादिक 'कायेम' और बीएनपी के छात्र नेता रकिबुल इस्लाम राकिब भी आंदोलन में परिचित चेहरे थे। एक और छात्र संगठन 'इंकलाब मंच' के सह-संस्थापक शरीफ उस्मान हादी की हत्या के बाद, बीएनपी ने इनके घावों पर मरहम लगाना शुरू किया है। ऐसे में लगता नहीं कि छात्र नेता किसी लीड रोल में नमूदार होंगे।

प्रेरणा

महानता की आहट: साधारण बालक से इतिहास निर्माता तक

इतिहास के पन्नों में जब हम किसी महान शासक या परिवर्तनकर्ता का नाम पढ़ते हैं, तो अक्सर उसके वैभव, विजय और साम्राज्य पर ध्यान टिक जाता है। परंतु उस महानता की जड़ें कहाँ होती हैं, यह प्रश्न कम ही पूछा जाता है। चंद्रगुप्त मौर्य का जीवन इस प्रश्न का सशक्त उत्तर देता है। वह उत्तर, जो यह बताता है कि महानता किसी राजमहल की देन नहीं होती, बल्कि वह व्यक्ति के स्वभाव, दृष्टि और आत्मविश्वास में धीरे-धीरे आकार लेती है। चंद्रगुप्त का बाल्यकाल इस सत्य का प्रमाण है कि प्रतिभा परिस्थितियों की मोहताज नहीं होती। चंद्रगुप्त ऐसे समय में बड़ा हो रहा था जब जीवन अनिश्चित था। न स्थायी आश्रय, न भविष्य की कोई स्पष्ट रेखा। फिर भी उसके भीतर असुरक्षा का भाव नहीं था। अभावों के बीच पले अधिकांश बच्चे या तो परिस्थितियों से समझौता कर लेते हैं या भीतर ही भीतर कुंठा पाल लेते हैं, पर चंद्रगुप्त इन दोनों से अलग था। उसमें देखने और समझने की एक अलग क्षमता थी। वह केवल घटनाओं का हिस्सा नहीं बनता था, बल्कि उनके अर्थ को समझने की कोशिश करता था। जिस घटना ने आचार्य चाणक्य का ध्यान उसकी ओर खींचा, वह बाहर से देखने में साधारण थी। बच्चों का खेल, जंगल का वातावरण और राजा-प्रजा की नकल। परंतु चाणक्य जैसे दूरदर्शी के लिए यह खेल नहीं, एक संकेत था। चंद्रगुप्त जिस तरह राजा की भूमिका निभा रहा था, उसमें कोई बनावट नहीं थी। उसका व्यवहार स्वाभाविक था, आदेशों में कठोरता नहीं बल्कि स्पष्टता थी और निर्णयों में जल्दबाजी नहीं बल्कि संतुलन था। यह संतुलन ही उसे अन्य बच्चों से अलग करता था।

प्रतिभा का पहला संकेत यही होता है कि व्यक्ति जिस भूमिका में होता है, उसे पूरी चेतना के साथ निभाता है। चंद्रगुप्त खेलते समय भी सजग था। वह केवल बोल नहीं रहा था, बल्कि सुन भी रहा था। वह केवल आदेश नहीं दे रहा था, बल्कि परिस्थितियों को समझकर निर्णय ले रहा था। यही गुण आगे चलकर उसे एक ऐसा शासक बनाता है, जो सत्ता को बोझ नहीं, उत्तरदायित्व मानता है।

आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त में जिस बात को सबसे पहले पहचाना, वह था उसका आत्मविश्वास। यह आत्मविश्वास किसी बाहरी प्रशंसा से नहीं, बल्कि भीतर से उपजा हुआ था। वह स्वयं को छोटा नहीं मानता था, भले ही दुनिया उसे महत्व न दे रही हो। यह भाव किसी भी व्यक्ति के जीवन में निर्णायक भूमिका निभाता है। जो स्वयं को सीमित मान लेता है, उसकी संभावनाएं वहीं समाप्त हो जाती हैं। चंद्रगुप्त ने अपने मन में कभी सीमाएं स्वीकार नहीं कीं।

भय का अभाव चंद्रगुप्त के स्वभाव का एक और महत्वपूर्ण पहलू था। वह जोखिमों से भागता नहीं था, बल्कि उन्हें समझने की कोशिश करता था। यह गुण उसे आक्रामक नहीं, बल्कि साहसी बनाता था। साहस और आक्रामकता में यही अंतर है कि साहसी व्यक्ति सोच-समझकर कदम उठाता है, जबकि आक्रामक व्यक्ति आवेग में। चंद्रगुप्त का साहस विवेक से जुड़ा हुआ था, और यही विवेक उसे नेतृत्व के योग्य बनाता है।

प्रतिभा केवल व्यक्तिगत उत्कर्ष तक सीमित नहीं रहती। उसमें समाज के लिए कुछ करने की आकांक्षा भी छिपी होती है। चंद्रगुप्त के व्यवहार में यह झलकता था कि वह व्यवस्था को महत्व देता है। उसके खेल में भी न्याय की भावना थी। वह पक्षपात नहीं करता था और न ही केवल अपनी भूमिका का आनंद लेता था। वह चाहता था कि व्यवस्था सुचारु चले, चाहे वह कल्पना की ही क्यों न हो। यही भावना आगे चलकर एक संगठित राज्य की नींव बनती है।

चाणक्य और चंद्रगुप्त का संबंध केवल गुरु-शिष्य का नहीं था, बल्कि दृष्टि और लक्ष्य का संगम था। चाणक्य ने चंद्रगुप्त में जो देखा, वह केवल वर्तमान नहीं, भविष्य था। उन्होंने उस बालक में एक ऐसे शासक की छवि देखी, जो केवल जीतने के लिए नहीं, बल्कि व्यवस्था स्थापित करने के लिए शासन करेगा। यह पहचान ही चाणक्य की महानता को भी रेखांकित करती है, क्योंकि हर कोई प्रतिभा को देख नहीं पाता, और जो देखता है, वह उसे संवारने का साहस भी नहीं करता।

आज के समय में यह कथा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। हम प्रतिभा को अंकों, पदों और प्रमाणपत्रों में खोजते हैं। हम भूल जाते हैं कि नेतृत्व, दूरदृष्टि और संतुलन जैसे गुण जीवन के व्यवहार में दिखते हैं, कागजों पर नहीं। चंद्रगुप्त का उदाहरण बताता है कि यदि सही समय पर सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो साधारण से दिखने वाला व्यक्ति भी असाधारण इतिहास रच सकता है।

यह कथा हमें आत्मचिंतन के लिए भी प्रेरित करती है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कोई न कोई क्षमता छिपी होती है। प्रश्न यह नहीं कि क्षमता है या नहीं, प्रश्न यह है कि क्या हम उसे पहचान पाते हैं। चंद्रगुप्त ने अपने भीतर छिपी शक्ति को पहचाना, और चाणक्य ने उसे दिशा दी। यही समन्वय उसे इतिहास का निर्माता बनाता है।

अंततः चंद्रगुप्त मौर्य का जीवन इस सत्य की पुष्टि करता है कि महानता का बीज बहुत पहले बोया जाता है। वह बीज व्यवहार, सोच और आत्मविश्वास में छिपा होता है। जो व्यक्ति अपने भीतर विस्तार की भावना पाल लेता है, जो परिस्थितियों से डरने के बजाय उन्हें समझने का साहस रखता है, वही एक दिन इतिहास की धारा मोड़ देता है। चंद्रगुप्त का सफर हमें यही सिखाता है कि सम्राट बनने से पहले मन में सम्राट की सोच जन्म लेनी चाहिए, क्योंकि वही सोच आगे चलकर पूरे युग का स्वरूप बदल देती है।

अस्तित्व संकट के बीच पारिवारिक एकता का राग

राजनीति के बारे में कहा जाता है कि यहां कोई न तो स्थायी दोस्त होता है और ना ही कोई स्थायी दुश्मन। राजनीति में ऐसे कम ही उदाहरण मिलेंगे,जहां दोस्ती के मूल में दिल का रिश्ता होता है। गौर से देखें तो संभावनाओं, चुनौतियों और अवसरों की बुनियाद पर पर दोस्ती या दुश्मनी के रिश्ते आगे बढ़ते हैं। महाराष्ट्र के दो राजनीतिक परिवारों के मिलन को भी इसी अंदाज और संदर्भ में देखा जाना चाहिए। राज्य का पवार परिवार हो या फिर ठाकरे कुनबा, अगर एक होता नजर आ रहा है या एक हुआ है तो इसका मतलब यह नहीं है कि दोनों परिवारों के प्रमुख अलंबरदारों के दिल मिल चुके हैं। बल्कि राजनीतिक संभावनाओं और अवसरों ने उन्हें एक होने को प्रेरित किया है। चाहे ठाकरे परिवार हो या फिर पवार कुनबा, दोनों में कुछ समानताएं हैं। शरद पवार हों या बाल ठाकरे, एक दौर में दोनों की महाराष्ट्र की राजनीति में तूती बोलती थी। पिछली सदी के आखिरी दशक में तो राजनीतिक हलके का एक बड़ा हिस्सा शरद पवार को देश का भावी प्रधानमंत्री तक मानने लगा था। इसी तरह महाराष्ट्र के टाइगर के रूप में बाल ठाकरे की ख्याति रही। दोनों ही राजनीतिक खानदानों के मुखिया का स्वाभाविक उत्तराधिकारी दोनों के भतीजे ही माने जाते थे। एक दौर तक शरद के उत्तराधिकारी के तौर पर देश और प्रदेश अजित पवार को देखता था। इसी तरह शिवसैनिक भी बाल ठाकरे के भतीजे राज ठाकरे को अगली पीढ़ी का ठाकरे सीनियर मान चुका था। लेकिन जब उत्तराधिकार सौंपने की बारी आई तो पवार ने अपनी बेटी सुप्रिया सुले पर भरोसा जताया और बाल ठाकरे ने अपने छोटे बेटे राज ठाकरे को। ऐसे हालात में अजित और राज ठाकरे को अपना भविष्य चुनौतीपूर्ण लगा, राजनीतिक संभावनाएं कम होती दिखीं तो दोनों ने अपनी राह अलग कर ली। उन्नीस साल पहले राज ठाकरे ने शिवसेना से अलग होकर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना बना ली तो अजित पवार ने राष्ट्रवादी कांग्रेस के मूल धड़े पर ही कब्जा कर लिया। पार्टी के असल संस्थापक शरद पवार पुछल्ला पार्टी लेकर एक तरह से किनारे का दल संभालने लगे।

पवार परिवार और ठाकरे कुनबे में बिखराव की कहानी भी अलग-अलग रही। जब तक बाल ठाकरे के बेटे उद्धव ठाकरे अपनी शिवसेना को बीजेपी के साथ खड़ा रखे, तब तक तो उनके नेतृत्व को चुनौती नहीं मिली। दल का राज्य में ठीकठाक समर्थन भी रहा। हालांकि महत्वाकांक्षाओं के साथ अलग हुए राज ठाकरे को राजनीतिक सफलताएं न के बराबर मिलीं। लेकिन जब से उद्धव ने बीजेपी को छोड़ कांग्रेस और पवार की एनसीपी का साथ पकड़ा, राजनीतिक मैदान में उसका आधार घटने लगा। वहीं पवार सीनियर से अलग होने के बावजूद बीजेपी के साथ के चलते अजित का राजनीतिक रूतबा कम नहीं हुआ। अलबत्ता कभी भारत के प्रधानमंत्री मैटेरियल देखे जाते रहे वरिष्ठ पवार की सियासी साख घटती चली गई। कुनबे में बिखराव के चलते दोनों परिवारों की राजनीतिक ताकत बीजेपी के सामने बौनी होती जा रही है। एक तरह से कह सकते हैं कि दोनों परिवारों के राजनीतिक अस्तित्व पर ही सवाल उठने लगा है।

एक कहावत है, मरता क्या नहीं करता। राजनीतिक अस्तित्व पर जब बन आती है तो कम ही सियासी हस्तियां होती हैं, जो समझौते नहीं करतीं। इसे समझदारी कहें या फिर राजनीति की रवायत, ठाकरे परिवार और पवार कुनबा-दोनों ही एक होने जा रहे हैं। पारिवारिक बिखराव को समेटने की कोशिश तेज हो गई है। ठाकरे बंधु तो बाकायदा प्रेस कांफ्रेंस करके एक हो चुके हैं, जबकि पवार परिवार अपने गढ़ बारामती में एक होने का संकेत दे रहा है। बारामती में हाल ही में पवार परिवार ने एक आयोजन किया, जिसमें आज के प्रमुख उद्योगपति गौतम अडानी के मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया था। इसे पवार कुनबे ने खूब प्रचारित किया। इस प्रचार का संदेश साफ है कि दोनों परिवार एक होने जा रहे हैं।

चाहे ठाकरे कुनबा हो या फिर पवार परिवार, अगर दोनों एक हो रहे हैं तो उसकी सिर्फ अस्तित्व की रक्षा भी नहीं है, बीजेपी रूपी चुनौती से पार पाना भी है और मुंबई महानगर पालिका, पुणे महानगर पालिका और पिंपरी चिंचवड़ महानगर पालिका पर कब्जे की चाहत भी है। मुंबई महानगर पालिका का सालाना बजट सत्तर हजार करोड़ रूपए का है। यह रकम उत्तर पूर्व के राज्यों के समूचे बजट से भी ज्यादा बैठती है। पिंपरी-चिंचवड़ महानगर पालिका के दायरे में एशिया का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है। जाहिर है कि यहां से कर के रूप में मोटी रकम आती है। ठाकरे परिवार की एकता के पीछे एक कारण जहां बृहन्मुंबई महानगर पालिका पर कब्जा जमाना है, वहीं पवार परिवार की एकता के पीछे पुणे महानगरपालिका और पिंपरी-चिंचवड़ महानगर पालिका पर कब्जा जमाना है। दोनों परिवारों को लगता है कि अगर वे बिखरे रहे तो उनके प्रभाव वाली महानगरपालिकाओं में उन्हें कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। यहां यह बताना जरूरी है कि एक दौर में बीएमसी पर शिवसेना का कब्जा रहता था तो पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ में पवार परिवार का। दोनों परिवारों के मिलन के पीछे की बड़ी वजह यही है।

भारतीय जनता पार्टी का इतिहास देखिए, अपने विस्तार के पहले चरण में वह अपने साथी दलों के सहयोग पर निर्भर रही। बाद के दौर में उसने खुद का प्रभाव बढ़ाया और अपने दम पर वह स्थापित होती चली गई। हरियाणा, उत्तर प्रदेश,मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात के बाद अब इसी तरह वह महाराष्ट्र में वह अपने दम पर उभर चुकी है। जबकि कुछ साल पहले तक महाराष्ट्र में एक तरह से शिवसेना के छोटे भाई की भूमिका में रहती थी। अब चाहे शिवसेना का टूटा हुआ धड़ा हो या अजित पवार वाली एनसीपी, दोनों उसके छोटे भाई की भूमिका में हैं। जिस तरह निकाय चुनावों में बीजेपी ने अपना दबदबा कायम किया है, उससे पवार परिवार की भी चिंताएं बढ़ी हैं और ठाकरे खानदान की भी। इसीलिए दोनों परिवार एक हुए हैं या होते नजर आ रहे हैं। पवार परिवार अब एक साथ पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ के चुनाव में उतरने जा रहा है तो ठाकरे परिवार मुंबई में।

अभियान

खाली बर्तनों का संदेश: दादी-नानी की सीख, संस्कृति और समृद्धि का गहरा संबंध

भारतीय परिवारों में दादी-नानी की बातें अक्सर कहावतों, टोटकों या साधारण घरेलू नियमों के रूप में सामने आती हैं। बचपन में ये बातें हमें कभी-कभी बेवजह की रोक-टोक या पुराने ज़माने की सोच लगती थीं, लेकिन जैसे-जैसे जीवन का अनुभव बढ़ता है, वैसे-वैसे समझ में आता है कि इन बातों के पीछे केवल परंपरा नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित रखने का गहरा मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक ज्ञान छिपा होता है। "बर्तनों को खाली मत रखना" या "नए साल की पहली सुबह खाली बर्तन नहीं दिखने चाहिए" जैसी सीख भी ऐसी ही एक परंपरा है, जो ऊपर से देखने में अंधविश्वास लग सकती है, लेकिन वास्तव में वह सोच, ऊर्जा और जीवन-दृष्टि से जुड़ी हुई है।

भारतीय संस्कृति में "खालीपन" को सामान्य अवस्था नहीं माना गया है। चाहे वह मन हो, घर हो या रसोई – हर जगह पूर्णता और संतुलन को महत्व दिया गया। दादी-नानी के लिए बर्तन केवल स्टील, पीतल या मिट्टी के पात्र नहीं थे। वे भोजन, पालन-पोषण और परिवार के अस्तित्व के प्रतीक थे। जिस घर में बर्तन हैं, वहां रसोई है; जहां रसोई है, वहां भोजन है; और जहां भोजन है, वहां जीवन है। ऐसे में खाली बर्तन केवल एक वस्तु का खाली होना नहीं, बल्कि जीवन में किसी न किसी स्तर पर कमी का संकेत माने जाते थे।

नए साल की पहली सुबह को विशेष महत्व देने के पीछे भी यही गहरी सोच थी। भारतीय परंपरा में समय को केवल घड़ी और कैलेंडर से नहीं, बल्कि ऊर्जा और चक्रों से जोड़ा गया है। वर्ष की पहली सुबह को एक नए चक्र की शुरुआत माना जाता था। दादी-नानी का विश्वास था कि जिस भाव और वातावरण के साथ साल की शुरुआत होती है, वही भाव धीरे-धीरे पूरे वर्ष में फैल जाता है। अगर साल की पहली सुबह ही घर में खाली बर्तन, अव्यवस्था और सूखापन दिखे, तो मन में अनजाने ही अभाव का भाव बैठ सकता है।

यहां मनोविज्ञान की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। दादी-नानी भले ही मनोविज्ञान का अध्ययन न करती हों, लेकिन वे मन की प्रकृति को अच्छी तरह समझती थीं। मन दृश्य से प्रभावित होता है। आंखें जो देखती हैं, वही अवचेतन मन स्वीकार करता है। अगर सुबह उठते ही खाली रसोई और उल्टे बर्तन दिखें, तो मन उसे "कमी" और "अभाव" के संकेत के रूप में दर्ज कर लेता है। इसके विपरीत, साफ-सुथरी रसोई और भरे हुए बर्तन मन में संतोष, सुरक्षा और स्थिरता का भाव पैदा करते हैं।

हिंदू दर्शन में अन्न को केवल भोजन नहीं माना गया, बल्कि उसे ब्रह्म कहा गया है। "अन्नं ब्रह्म" का अर्थ यही है कि अन्न जीवन का मूल आधार है। दादी-नानी के लिए अन्न का सम्मान करना जीवन का सम्मान करना था। वे जानती थीं कि अन्न प्रकृति, श्रम और ईश्वर – तीनों के सहयोग से मिलता है। खाली बर्तन उन्हें यह याद दिलाते थे कि कहीं न कहीं अन्न की कद्र कम हो रही है। इसलिए वे चाहती थीं कि बर्तन खाली न रहें, कम से कम प्रतीकात्मक रूप से ही सही। लक्ष्मी जी की अवधारणा भी इसी सोच से जुड़ी हुई है। आम तौर पर लक्ष्मी को धन की देवी कहा जाता है, लेकिन भारतीय परंपरा में लक्ष्मी का अर्थ केवल पैसे तक सीमित नहीं है। लक्ष्मी समृद्धि, व्यवस्था, संतुलन, सौंदर्य और संतोष का प्रतीक हैं। जहां अन्न है, अनुशासन है और जीवन में संतुलन है, वहीं लक्ष्मी का वास माना गया है। नए साल की पहली सुबह खाली बर्तन देखना दादी-नानी के अनुसार लक्ष्मी की अनुपस्थिति का संकेत था, क्योंकि यह अन्न और व्यवस्था की कमी को दर्शाता था।

इसी कारण पुराने समय में यह परंपरा थी कि रात को बर्तन धोने के बाद भी उन्हें पूरी तरह खाली न छोड़ा जाए। कहीं थोड़ा सा चावल, कहीं दाल, कहीं दूध या पानी रख दिया जाता था। यह कोई बड़ा धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि एक छोटी-सी आदत थी जो पूरे घर के वातावरण को सकारात्मक बनाए रखती थी। सुबह उठते ही भरे बर्तन देखने से मन में यह भाव आता था कि घर में कमी नहीं है, सब कुछ ठीक है।

वास्तु शास्त्र में रसोईघर को घर की ऊर्जा का केंद्र माना गया है। यहां से केवल भोजन नहीं, बल्कि पूरे परिवार की शारीरिक और मानसिक ऊर्जा निकलती है। यदि रसोई में गंदगी, अव्यवस्था और खालीपन हो, तो वहां नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ जाता है। खाली बर्तन उसी नकारात्मकता का प्रतीक बन जाते हैं। इसके विपरीत, साफ रसोई और भरे हुए बर्तन सकारात्मक ऊर्जा, स्थिरता और समृद्धि का संकेत देते हैं। दादी-नानी शायद वास्तु के श्लोक न जानती हों, लेकिन उनका व्यवहार इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित था।

यह परंपरा सामाजिक और व्यावहारिक दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण थी। पुराने समय में परिवार बड़े होते थे और संसाधन सीमित। ऐसे में भोजन की कद्र और अनुशासन बहुत जरूरी था। खाली बर्तन न रखने की आदत लोगों को यह सिखाती थी कि अन्न को व्यर्थ न करें और उपलब्ध संसाधनों का सम्मान करें। नए साल की सुबह यह संदेश और भी गहरा हो जाता था, क्योंकि वह पूरे वर्ष के लिए एक उदाहरण बनता था।

आधुनिक जीवन में हम अक्सर इन बातों को अंधविश्वास कहकर खारिज कर देते हैं। लेकिन अगर गहराई से देखा जाए, तो यह परंपरा डर पर नहीं, बल्कि सोच पर आधारित है। यह हमें यह सिखाती है कि जीवन को अभाव के नजरिए से नहीं, बल्कि पूर्णता के भाव से देखना चाहिए। जब हम अपने आसपास भरे हुए बर्तन, व्यवस्थित घर और संतुलित रसोई देखते हैं, तो हमारा मन भी उसी संतुलन को अपनाने लगता है।

नए साल की पहली सुबह खाली बर्तन न रखने की सीख हमें कृतज्ञता का भाव भी सिखाती है। यह हमें याद दिलाती है कि हमारे पास अन्न है, घर है और परिवार है। कृतज्ञ व्यक्ति ही वास्तव में समृद्ध होता है। दादी-नानी इस भावना को बड़े शब्दों में नहीं कहती थीं, बल्कि छोटे-छोटे नियमों के माध्यम से हमारे जीवन में उतार देती थीं।

आज के समय में जब नया साल आतिशबाजी, पार्टी और सोशल मीडिया पोस्ट तक सीमित हो गया है, तब ऐसी परंपराएं हमें अपनी जड़ों से जोड़ती हैं। ये हमें याद दिलाती हैं कि नया साल केवल तारीख बदलने का नाम नहीं, बल्कि सोच और ऊर्जा को नई दिशा देने का अवसर है। खाली बर्तन न रखना उसी दिशा में उठाया गया एक छोटा-सा लेकिन गहरे अर्थ वाला कदम है।

अंततः दादी-नानी की यह सीख हमें यह समझाती है कि समृद्धि केवल धन से नहीं आती। समृद्धि आती है सोच से, अनुशासन से और सम्मान से। बर्तन भरे रखना एक प्रतीक है – इस बात का कि हम जीवन को खालीपन से नहीं, बल्कि पूर्णता, आशा और संतोष के भाव से देखते हैं। जब यह भाव मन में बस जाता है, तो नया साल ही नहीं, पूरा जीवन अधिक संतुलित, शांत और समृद्ध बन जाता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम के ड्राइवर व हेल्पर स्तरीय उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए

राज्य सरकार के महत्वपूर्ण अंग के रूप में नागरिकों की सुरक्षित सवारी और समय पालन का सेवा दायित्व बस के सारथी के सिर है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- राज्य की आधुनिक परिवहन व्यवस्था के प्रहरी बस चालक हैं
- प्रधानमंत्री ने छोटे से छोटे व्यक्ति तक सड़क-मार्ग, बिजली-पानी, स्वास्थ्य सेवा, बस सेवा जैसी बुनियादी सुविधाएँ पहुँचाने वाला विकास सुनिश्चित किया है
- किसी भी स्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखते हुए यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी बस के सारथी की है

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

- हाईवे लोड के साथ यातायात बोझ तथा प्रदूषण घटाने का उद्देश्य, 2027 तक एसटी बस में दैनिक यात्रा करने वाले नागरिकों की संख्या 30 लाख तक पहुँचाने का लक्ष्य
- वर्ष के 365 दिन और 24 घण्टे जनसेवा के लिए कार्यरत रहने वाले गुजरात के कर्मयोगियों को सलाम
- आधुनिक एवं सुविधापूर्ण परिवहन व्यवस्था के लिए वर्ष 2025 में 1714 नई बसें तथा 27 नए बस अड्डे नागरिकों की सेवा में समर्पित
- **पिछले 40 दिन में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में 45 हजार से अधिक उम्मीदवारों को अलग-अलग विभागों में नियुक्ति पत्र दिए गए : परिवहन राज्य मंत्री श्री प्रवीण माळी**
- **मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जन सारथी ड्राइविंग स्कूल का शुभारंभ कराया**

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को गांधीनगर में गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम (जीएसआरटीसी) के 3084 ड्राइवर तथा 1658 हेल्पर स्तरीय उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। नियुक्ति पत्र प्रदान समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री पटेल ने कहा कि सड़क परिवहन निगम की बसों के ड्राइवर सुदूरवर्ती लोगों तक पहुँचते हैं। इसलिए ये बस चालक सुरक्षित सवारी के साथ समय पालन की बड़ी जिम्मेदारी का वहन कर सरकार की इमेज का निर्माण करने वाले महत्वपूर्ण अंग हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने छोटे से छोटे व्यक्ति तक सड़क-मार्ग, बिजली-पानी, स्वास्थ्य सेवा, बस सेवा जैसी बुनियादी सुविधाएँ पहुँचाने वाला विकास सुनिश्चित किया है।

मुख्यमंत्री ने नवनियुक्त उम्मीदवारों को राज्य की परिवहन व्यवस्था का प्रहरी बताया। इस संबंध में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य की परिवहन व्यवस्था का कायाकल्प किया और पुरानी-जर्जर बसों के स्थान पर एसी वॉल्वो जैसी बसें आज नागरिकों की सेवा में कार्यरत की गई हैं। राज्य सरकार ने परिवहन में जो आधुनिक सुविधाएँ मुहैया कराई हैं, उनका अच्छी तरह जतन करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बस ड्राइवरों तथा हेल्परों के सिर है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि नागरिक एसटी बस ड्राइवरों के भरोसे निश्चिंत होकर यात्रा करते हैं। नागरिकों को समय पर गंतव्य स्थान तक पहुँचा कर सरकारी सेवा के साथ सामाजिक दायित्व निभाने का कार्य भी ये बस चालक करते हैं। यानी आम आदमी के जीवन से जुड़े बस चालकों का तन-मन से स्वस्थ रहना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में स्वस्थ रहकर, मानसिक संतुलन बनाए रखते हुए ड्यूटी करना जरूरी है। इसके लिए फॉजिटिविटी से कार्यरत रहकर तथा जीवन में किसी भी स्थिति में बैलेंस बनाए रखने की सज्जता अर्जित करने का अनुरोध किया। श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि नागरिक जीपीएस सहित आधुनिक सुविधाओं से सज्ज बसों की टैकिंग मोबाइल के माध्यम से कर सकते हैं। फलस्वरूप जिन नागरिकों के लिए बसें चल रही हैं, उनकी समयबद्धता बनाए रखने का ध्यान भी बस चालकों को रखना है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने 2047 में भारत को विकसित बनाने के लिए जो लक्ष्य रखा है, उसमें स्वच्छता को प्राथमिकता दी है। इस संदर्भ में उन्होंने नवनियुक्त उम्मीदवारों का राज्य की आधुनिक सुविधाओं से सज्ज बसों में स्वच्छता बनाए रखने का आह्वान किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जन सारथी ड्राइविंग स्कूल का शुभारंभ भी कराया।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

राज्य के नागरिकों की सुख-सुविधा के लिए 365 दिन और 24 घण्टे कार्यरत विभागों के कर्मचारियों को अभिनंदन देते हुए उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि जब पूरी दुनिया त्योहार मनाती है, तब गुजरात के कुछ विभाग एक मिनट के लिए भी ठहरते नहीं हैं। श्री संघवी ने गर्व के साथ कहा कि अस्पतालों, पुलिस थानों, फायर ब्रिगेड तथा बिजली विभाग की तरह एसटी निगम के सभी कर्मचारियों की सेवाएँ 365 दिन और 24 घण्टे कार्यरत रहती हैं। रात-दिन, ठंड-गर्मी-बरसात देखे बिना काम करने वाले इन कर्मयोगियों की मेहनत ही गुजरात के सुशासन का सच्चा आधारस्तंभ है। श्री संघवी ने कर्मयोगियों की अविरत जन सेवा की ज्योत को मंच से दिल से सैल्यूट किया।

राज्य सरकार की कार्यक्षमता पर प्रकाश डालते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि 3084 ड्राइवर तथा 1658 हेल्पर स्तरीय नवनियुक्त उम्मीदवारों की इस भर्ती प्रक्रिया द्वारा निगम को अधिक मजबूत बनाया गया है।

परिवहन क्षेत्र में भावी लक्ष्य निर्धारित करते हुए श्री संघवी ने कहा कि दैनिक अनुमानित 24 लाख यात्रियों को परिवहन सेवा प्रदान करने वाले एसटी निगम ने वर्ष 2025 तक 27 लाख यात्रियों को सेवा प्रदान करने का एक लक्ष्य निर्धारित किया था। निगम ने दैनिक 27 लाख यात्रियों को सेवा देने के लक्ष्य को निर्धारित समय में प्राप्त किया है, जो गर्व की बात है। अब 2027 तक इस लक्ष्य को बढ़ाकर 30 लाख तक पहुँचाने का सरकार का संकल्प है। एक अध्ययन के अनुसार यह लक्ष्य प्राप्त होगा, तो हाईवे लोड में तो कमी आएगी ही, साथ ही सार्वजनिक मार्गों पर चलने वाले फोर व्हीलरों की संख्या 25 हजार और टू व्हीलरों की संख्या लगभग 1 लाख घटेगी, जो प्रदूषण के साथ यातायात बोझ कम करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इसके अलावा, हाल में 9 लाख विद्यार्थी एसटी बसों का लाभ ले रहे हैं, जिसे बढ़ाकर 10 लाख तक ले जाने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि अगर हम 10 लाख विद्यार्थियों तक पहुँच सकेंगे, तो और एक लाख परिवारों को सीधी सहायता मिलेगी और उन एक लाख बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने में हमारा योगदान जुड़ेगा।

वर्ष 2025 में एसटी विभाग द्वारा किए गए कार्यों से अवगत कराते हुए उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि केवल एक वर्ष में 1714 नई बसें जनता की सेवा में जोड़ी गई हैं, जिनमें 962 सुपर एक्सप्रेस, 272 सेमी लग्जरी, 350 मिडी बसें, 30 वॉल्वो और 100 एसी बसें शामिल हैं। इसके साथ ही, यात्रियों की सुविधा के लिए 2025 में 27 नए बस अड्डों का लोकार्पण किया गया है तथा भविष्य के लिए 29 नए कार्यों का शिलान्यास भी कर दिया गया है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से बसों में एवं बस अड्डों पर स्वच्छता बनाए रखने पर विशेष ध्यान देने की अपील की।

इस अवसर पर परिवहन राज्य मंत्री श्री प्रवीण माळी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व एवं उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में एसटी निगम ने अनेक नए आयाम हासिल किए हैं। आगामी समय में एसटी निगम 100 प्रतिशत डिजिटल पेमेंट की ओर आगे बढ़ेगा, जिससे नागरिकों को खुल्ले पैसे लाने से मुक्ति मिलेगी। पिछले लगभग 40 दिनों में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में 45 हजार से अधिक उम्मीदवारों को सरकारी नौकरी के लिए विभिन्न विभागों में नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देशभर में सरकारी नौकरी के लिए शुरू की गई 100 प्रतिशत पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के तहत परीक्षा आयोजित कर अधिक से अधिक उम्मीदवारों को नौकरी मिले; उस प्रकार का आयोजन गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अगुवाई में हो रहा है। राज्य में गुड गवर्नेंस के फलस्वरूप सुदूरवर्ती युवा भी परीक्षा पास कर सरकारी सेवा में जुड़ रहे हैं। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के करकमलों से चार उम्मीदवारों को सांकेतिक रूप से नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए तथा निगम द्वारा बनाए गए जन सारथी ड्राइविंग स्कूल का शुभारंभ किया गया।

प्रधान सचिव श्री हारित शुक्ल ने सबका स्वागत करते हुए लगभग 4700 नए जुड़े कर्मयोगियों की पारदर्शी एवं मैरिट आधारित नियुक्ति की संपूर्ण प्रक्रिया की प्रशंसा की।

इस अवसर पर महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक सर्वश्री रीटाबेन पटेल, जयंतीभाई पटेल, बलराजसिंह चौहाण, अग्रणी श्री आशिषभाई दवे, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, उपाध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक श्री एम. नागराजन एवं बड़ी संख्या में नवनियुक्त उम्मीदवार उपस्थित रहे।

एमएसएमई निर्यात को बढ़ावा देने के लिए निर्यात प्रोत्साहन मिशन के तहत दो प्रमुख उपाय शुरू किए गए: फियो ने निर्यात ऋण तक पहुंच में सुधार के कदम का स्वागत किया

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 2 जनवरी, 2026: फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (फियो) ने भारत सरकार के निर्यात प्रोत्साहन मिशन की निर्यात प्रोत्साहन उप-योजना के तहत दो महत्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत का स्वागत किया है, जिसका उद्देश्य एमएसएमई निर्यात को मजबूत करना और किफायती व्यापार वित्त तक पहुंच में काफी सुधार करना है।

इस विकास पर टिप्पणी करते हुए, फियो के अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने कहा, "प्री- और पोस्ट-शिपमेंट निर्यात ऋण के लिए ब्याज सहायता और संपार्श्विक गारंटी तंत्र की शुरुआत एमएसएमई निर्यातकों के सामने आने वाली दो सबसे बड़ी चुनौतियों -ऋण की उच्च लागत और संपार्श्विक की कमी- को दूर करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। ये उपाय वैश्विक बाजारों में भारतीय एमएसएमई की प्रतिस्पर्धात्मकता को बहुत बढ़ाएंगे।"

पहला उपाय पात्र ऋण संस्थानों द्वारा दिए गए प्री- और पोस्ट-शिपमेंट रुपये निर्यात ऋण पर ब्याज सबवेंशन प्रदान करता है। 2.75 प्रतिशत की आधार ब्याज सबवेंशन की घोषणा की गई है, जिसमें अधिसूचित कम प्रतिनिधित्व वाले या उभरते बाजारों में निर्यात के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन का प्रावधान है, जो परिचालन तत्परता के अधीन है। ब्याज सहायता हार्मोनाइज्ड सिस्टम (एचएस) छह-अंकीय स्तर पर टैरिफ लाइनों की एक अधिसूचित सकारात्मक सूची के तहत निर्यात पर लागू होगी, जिसमें भारत की लगभग 75 प्रतिशत टैरिफ लाइनें शामिल हैं, जो उच्च एमएसएमई भागीदारी वाले क्षेत्रों को दर्शाती हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए प्रति आयातक निर्यातक कोड (आईईसी) 50 लाख रुपए की निर्यातक-वार वार्षिक सीमा निर्धारित की गई है, जिसमें दरों की समीक्षा मार्च और सितंबर में द्विवार्षिक रूप से की जाएगी। श्री रल्हन ने कहा कि डेटा-संचालित सकारात्मक सूची, जिसमें श्रम-गहन क्षेत्रों, एमएसएमई एकाग्रता और मूल्यवर्धन पर ध्यान केंद्रित किया गया है, यह सुनिश्चित करेगी कि लाभ वास्तविक निर्यातकों तक पहुंचे। रक्षा और स्कोमेट उत्पादों को शामिल करने से रणनीतिक और उच्च-प्रौद्योगिकी निर्यात को भी समर्थन मिलेगा। दूसरा उपाय क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट फॉर माइक्रो एंड स्मॉल एंटरप्राइजेज (सीजीटीएमएसई) के साथ साझेदारी में निर्यात ऋण के लिए संपार्श्विक गारंटी सहायता प्रदान करता है। इस मैकेनिज्म के तहत, माइक्रो और छोटे निर्यातकों के लिए 85 प्रतिशत तक और मीडियम निर्यातकों के लिए 65 प्रतिशत तक की गारंटी कवरेज उपलब्ध होगी, जिसमें प्रति निर्यातक प्रति वित्त वर्ष अधिकतम 10 करोड़ रुपए का गारंटीड एक्सपोजर होगा।

फियो प्रमुख के अनुसार, "यह कोलैटरल गारंटी फ्रेमवर्क बैंकों को एक्सपोर्ट-ओरिएंटेड एमएसएमई को लोन देने के लिए प्रोत्साहित करेगा और मौजूदा क्रेडिट गारंटी योजनाओं को पूरा करेगा। यह निर्यात करने वाले समुदाय, खासकर छोटे निर्यातकों की लंबे समय से चली आ रही मांग है, जिन्हें कोलैटरल की ज़रूरतों को पूरा करने में मुश्किल होती है।"

दोनों उपाय शुरू में पायलट बेसिस पर लागू किए जाएंगे, जिसमें फीडबैक और डेटा एनालिसिस के आधार पर लगातार मॉनिटरिंग और सुधार किए जाएंगे। इंटरेस्ट सबवेंशन के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक और कोलैटरल गारंटी योजना के लिए सीजीटीएमएसई द्वारा विस्तृत ऑपरेशनल गाइडलाइंस जारी की जाएंगी।

केंद्रीय कैबिनेट द्वारा 12 नवंबर 2025 को अप्रूव्ड एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन का वित्त वर्ष 2025–26 से वित्त वर्ष 2030–31 की अवधि के लिए कुल आउटले 25,060 करोड़ रुपए है। यह मिशन वाणिज्य विभाग, एमएसएमई मंत्रालय और वित्त मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से लागू किया गया है, और एमएसएमई पहली बार निर्यात करने वालों और लेबर-इंटेंसिव सेक्टर्स पर फोकस करता है।

इस मिशन में दो इंटीग्रेटेड सब-स्कीम शामिल हैं:

निर्यात प्रोत्साहन, जो किफायती और विविध ट्रेड फाइनेंस तक पहुंच पर फोकस करता है; और

निर्यात दिशा, जो मार्केट एक्सेस, ब्रांडिंग, लॉजिस्टिक्स, रेगुलेटरी कंप्लायंस और ट्रेड इंटेलिजेंस जैसे नॉन-फाइनेंशियल इनेबलर्स को सपोर्ट करता है।

संक्षेप में, श्री रल्हन ने कहा कि फियो का मानना है कि ये उपाय निर्यात की लागत को कम करेंगे, फाइनेंस तक पहुंच का विस्तार करेंगे, निर्यात बाजारों में विविधता लाएंगे और भारत के निर्यात ब्रांड को मजबूत करेंगे। वे एमएसएमई को ग्लोबल वैल्यू चेन में और गहराई से इंटीग्रेट करने और लगातार निर्यात-आधारित विकास को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण निर्णय

राज्य की सभी नदियों के दोनों तटों की भूमि पर वन संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य वन विभाग को सौंपा गया

गुजरात की 185 नदियों के दोनों तटों की भूमि पर वन विभाग द्वारा 'वृक्ष पोषण अभियान' चलाया जाएगा : वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया

निर्णय के अन्य महत्वपूर्ण बिंदु

- वृक्ष पोषण से पहले भूमि का सीमांकन तथा जीआईएस मैपिंग कर कार्यक्षेत्र - भूमि की पहचान की जाएगी
- पहचानी गई भूमि का उपयोग केवल ग्रीन कवर-वृक्ष पोषण के लिए ही किया जाएगा
- ऐसी भूमि की सुरक्षा एवं रखरखाव की जिम्मेदारी वन विभाग की रहेगी
- इस प्रकार की भूमि पर यदि अतिक्रमण होगा, तो उसे हटाने का अधिकार वन विभाग के पास रहेगा
- सामाजिक वनीकरण अंतर्गत शर्तों के अधीन संबंधित जिला कलेक्टर कार्यालय द्वारा स्थान का चयन किया जाएगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : वायु प्रदूषण और क्लाइमेट चेंज की वैश्विक समस्या के बीच पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से वृक्ष पोषण एवं संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। केंद्र सरकार के वर्ष 2023 की इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट के अनुसार गुजरात में वन एवं वृक्ष कवर राज्य के कुल क्षेत्रफल का 11.03 प्रतिशत है। वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि इस ग्रीन कवर में वृद्धि करने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है, जिसके अंतर्गत गुजरात की कुल 185 नदियों के दोनों तटों की भूमि पर वन विभाग द्वारा 'वृक्ष पोषण अभियान' चलाया जाएगा। ग्रीन कवर बढ़ने से राज्य का वन क्षेत्र बढ़ेगा, जिससे वर्षा में वृद्धि होगी, जलवायु परिवर्तन रोका जा सकेगा, साथ ही राज्य में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ेगी और कार्बन फुटप्रिंट में कमी आएगी।

वन मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने और विवरण देते हुए कहा कि राज्य में ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए राज्य की सभी 185 नदियों के दोनों तटों के वन संरक्षण तथा संवर्धन का कार्य वन विभाग को सौंपा गया है। इसके अंतर्गत वृक्ष पोषण के उपयोग हेतु भूमि का पहले सीमांकन तथा जीआईएस मैपिंग कर कार्यक्षेत्र निश्चित कर आवश्यकता वाली भूमि की पहचान की जाएगी। भूमि की स्थिति, विशेष रूप से सरकारी भूमि और अनुपयोगी सरकारी भूमि के रिकॉर्ड की जांच कर विकासोन्मुखी प्राथमिकताएं बनी रहें, इसके लिए इस भूमि का उपयोग केवल ग्रीन कवर-वृक्ष पोषण के लिए ही किया जाएगा। अन्य किसी उद्देश्य के लिए ऐसी भूमि का उपयोग न हो, यह सुनिश्चित किया जाएगा। वन मंत्री ने कहा कि इस कार्यक्षेत्र अंतर्गत आने वाली भूमि पर किसी भी प्रकार की वाणिज्यिक या लाभकारी गतिविधि नहीं करनी होगी। ऐसी विवादास्पद भूमि पर केवल ग्रीन कवर-वृक्ष पोषण करने हेतु उपयोग की अनुमति दी जाती है। ऐसी भूमि की सुरक्षा, रखरखाव एवं संरक्षण की जिम्मेदारी वन एवं पर्यावरण विभाग/उसके अधीनस्थ कार्यालयों की होगी।

उन्होंने जोड़ा कि इस कार्यक्षेत्र अंतर्गत भूमि पर यदि किसी प्रकार का अतिक्रमण हो, तो उसे हटाने की कार्रवाई वन एवं पर्यावरण विभाग/उसके अधीनस्थ कार्यालयों को करनी होगी। यदि इस भूमि से बिजली लाइन या अन्य पाइपलाइन गुजरती है और उस संबंध में भूमि की स्थिति के अनुसार किसी अन्य संस्था-कार्यालय का अभिप्राय लेना आवश्यक लगे, तो संबंधित कार्यालय का अभिप्राय प्राप्त करना होगा।

उन्होंने कहा कि संरक्षित क्षेत्रों में वन्यप्राणी विभाग द्वारा तथा वन क्षेत्रों में आने वाली सभी नदियों के रिवराइन फॉरेस्ट लैंडस्केप मैनेजमेंट से संबंधित कार्य क्षेत्रीय वन विभागों को करने होंगे। उन्होंने जोड़ा कि इन संरक्षित क्षेत्रों एवं वन क्षेत्रों के बाहर स्थित सभी नदियों के रिवराइन फॉरेस्ट लैंडस्केप मैनेजमेंट से संबंधित कार्य सामाजिक वनीकरण विभागों द्वारा निर्धारित शर्तों के अधीन तथा संबंधित जिला कलेक्टर कार्यालय के माध्यम से स्थान का चयन कर, उनसे वह स्थान प्राप्त कर आगे का समग्र कामकाज शुरू किया जाएगा।

वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीण माळी ने कहा कि रिवराइन फॉरेस्ट लैंडस्केप मैनेजमेंट के अंतर्गत नदियों के दोनों तटों पर 'वृक्ष पोषण अभियान' में नर्मदा, तापी, पूर्णा सहित दक्षिण गुजरात क्षेत्र की 17 नदियों, सौराष्ट्र क्षेत्र की 71 तथा कच्छ क्षेत्र की सबसे अधिक 97 नदियों को शामिल किया गया है। इस अभियान से नदियों के दोनों तटों की भूमि का कटाव रुकेगा और साथ ही भूमिगत जल स्तर भी और अधिक ऊंचा होगा।

उन्होंने आगे जानकारी देते हुए कहा कि गुजरात में ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए वन महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक वनों का निर्माण, नमो वड वन, तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देशभर में शुरू किए गए मिशन लाइफ के अंतर्गत 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत विशेष अभियान चलाया गया है। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में वृक्ष पोषण में उत्तर प्रदेश के बाद गुजरात देश में दूसरे स्थान पर है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस नए अभियान के बाद गुजरात के ग्रीन कवर में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

सप्ताह के दौरान सोना-चांदी में परस्पर विरुद्ध चाल: सोना वायदा 2293 रुपये लुढ़का: चांदी वायदा में 12083 रुपये का ऊछाल

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 26 दिसंबर-2025 से 1 जनवरी-2026 के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 6812198.24 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 556441.35 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 6255663.85 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 34851 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल साप्ताहिक प्रीमियम टर्नओवर 36676.96 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 443655.16 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 138574 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 140465 रुपये और नीचे में 134300 रुपये पर पहुंचकर, 138097 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 2293 रुपये या 1.66 फीसदी की गिरावट के साथ 135804 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 115 रुपये या 0.1 फीसदी गिरकर 111936 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 42 रुपये या 0.3 फीसदी लुढ़ककर 13944 रुपये प्रति 1 ग्राम सप्ताह के अंत में बंद हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा 138565 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 140499 रुपये और नीचे में 134350 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 2316 रुपये या 1.68 फीसदी औंधकर 135771 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में प्रति 10 ग्राम 138800 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 140867 रुपये और नीचे में 131989 रुपये पर पहुंचकर, 138443 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 1746 रुपये या 1.26 फीसदी गिरकर 136697 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 224374 रुपये के भाव पर खूलकर, 254174 रुपये के उच्च और 222502 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 223790 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 12083 रुपये या 5.4 फीसदी के ऊछाल के साथ 235873 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 13688 रुपये या 6.1 फीसदी बढ़कर 237998 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 13697 रुपये या 6.11 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 238010 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 76529.16 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 120.05 रुपये या 10.24 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1292.5 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 3 रुपये या 0.98 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 308.05 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 9.15 रुपये या 3.18 फीसदी बढ़कर 297.3 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि सीसा जनवरी वायदा 40 पैसे या 0.22 फीसदी के सुधार के साथ सप्ताह के अंत में 182.75 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

क्रूड ऑयल वायदा 49 रुपये नरम : कमोडिटी वायदाओं में 556441.35 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 6255663.85 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 443655.16 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 34851 पॉइंट के स्तर पर

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 36117.09 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 5281 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 5314 रुपये के उच्च और 5170 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 49 रुपये या 0.93 फीसदी लुढ़ककर 5223 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 49 रुपये या 0.93 फीसदी गिरकर 5223 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 344 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 376.6 रुपये के उच्च और 317.1 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 339.1 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 9.6 रुपये या 2.83 फीसदी लुढ़ककर 329.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 9.4 रुपये या 2.77 फीसदी औंधकर सप्ताह के अंत में 329.8 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 960 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 51.7 रुपये या 5.41 फीसदी की तेजी के संग 1008.1 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 176923.68 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 266731.48 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 68287.78 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 3723.49 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 233.03 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 4284.85 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4125.77 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 31903.28 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 15753 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 49198 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 12588 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 180592 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 23896 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 13147 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 28310 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 54013 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18244 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 25286 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा 35200 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 36705 के उच्च और 34293 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 359 पॉइंट

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस : वाइब्रेंट कच्छ जिला स्तरीय कार्यक्रम

वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया के करकमलों से गांधीधाम में वाइब्रेंट कच्छ जिला स्तरीय कार्यक्रम का भव्य शुभारंभ

▸▸ वाइब्रेंट कच्छ कार्यक्रम में कुल 334 एमएसएमई इकाइयों के साथ 8500 करोड़ रुपए के एमओयू पर हस्ताक्षर हुए

▸▸ उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा की गरिमामय उपस्थिति

▸▸ हस्तकला आधारित रोजगार वाला कच्छ आज गुजरात में औद्योगिक विकास का केन्द्र : राज्य मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : कच्छ के गांधीधाम में शुक्रवार को वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने वाइब्रेंट कच्छ जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ कराया। इस कार्यक्रम में कुल 334 एमएसएमई इकाइयों के साथ 8500 करोड़ रुपए के एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। गांधीधाम के डॉ. बाबासाहब आंबेडकर कन्वेंशन सेंटर में वाइब्रेंट कच्छ कार्यक्रम का शुभारंभ कराते हुए श्री मोढवाडिया ने कहा कि कच्छ की सत्वशील जनता ने अनेक प्राकृतिक आपदाओं की पीड़ा झेलकर आज कच्छ को विकास का केन्द्र बनाया है। सरकार के विजन तथा कच्छियों की तेजस्वी शक्ति तथा सत्व से कच्छ औद्योगिक हब बना है। कच्छ इस बात का उदाहरण है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता से एक प्रदेश का किस प्रकार कायाकल्प हो सकता है। कच्छी जिस प्रकार चुनौतियों को स्वीकार करने वाली जनता है, उसी प्रकार प्रधानमंत्री ने कच्छ की चुनौतियों को अवसर में पलटकर कच्छ का अभूतपूर्व विकास किया है। एक समय पानी, रोजगार आदि मुद्दों से पीड़ित कच्छ आज अन्य राज्यों के लोगों को रोजगार दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की सरकार द्वारा विकास के रथ को आगे बढ़ाए जाने से कच्छ आज टूरिज्म, खेती तथा औद्योगिक विकास में अग्रसर बना है। कच्छ रिन्यूएबल एनर्जी का हब बनने के साथ देश का 40 प्रतिशत कारगो हैंडल कर रहा है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कच्छ के इलेक्ट्रॉनिक कम्पोनेंट के पीसीबी के निर्माण, ग्रीन हाइड्रोजन, डेटा सेंटर, ब्लू इकोनॉमी जैसे क्षेत्रों के विकास का मुख्य केन्द्र बन सकता है। ऐसे में उन्होंने निवेशकों का आह्वान किया कि वे इन क्षेत्रों में जुड़ें।

इस अवसर पर धोलेरा के विकास की चर्चा करते हुए वन एवं पर्यावरण मंत्री ने जोड़ा की चुनौतियों को अवसर में परिवर्तित करना प्रधानमंत्री के विजन में है। कोरोना काल में गिनती के दिनों में वैक्सीन बनाने से लेकर लोगों को देने तक का कार्य करके भारत ने अन्य देशों को पीछे छोड़ दिया था। आज भारत वैक्सीन हब बना है। उसी प्रकार सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक कम्पोनेंट की चुनौतियों को स्वीकार कर उसके उत्पादन के लिए सज्ज हुआ भारत आने वाले वर्षों में आत्मनिर्भर बनकर दुनिया में अग्रसर बनेगा।

उन्होंने आगे कहा कि विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए हर क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनना होगा। इसके लिए कच्छ में भरपूर पोटेंशियल होने के कारण भारत के भविष्य का निर्माण करने वाले क्षेत्र में निवेश के लिए कच्छ में आकर संपत्ति सृजन करने का उन्होंने आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आने वाला समय एआई, क्वॉण्टम टेक्नोलॉजी तथा बायोटेक्नोलॉजी का होने के कारण इन क्षेत्रों में विकास के लिए आधुनिक रिसर्च सेंटर, एक्सीलेंस लैब आदि का निर्माण कर गुजरात सज्ज बना है। उन्होंने जोड़ा कि कच्छ का गोल्डन पीरियड चल रहा है। उन्होंने टिकाऊ विकास की विभावना तथा पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ कच्छ में वर्ल्ड क्लास नर्सरी बनाने को कहा। कच्छ में ग्रीन कवर बढ़ाने के अभियान में उद्योगों से जुड़ने का भी उन्होंने अनुरोध किया।

उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा ने प्रसंगोचित संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जब मुख्यमंत्री के रूप में कमान संभाली, तब से वाइब्रेंट गुजरात की शुरुआत हुई थी। आज जिला स्तर पर उसका आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए उन्होंने कच्छ जिला प्रशासन तथा कच्छ के उद्यमियों को अभिनंदन दिया।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने विकास को आंदोलन बनाकर भूकंप की पीड़ा के साथ पानी, बेरोजगारी की स्थिति में कच्छ को फिर से खड़ा किया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन से कच्छ अविरत विकास साध रहा है। ढाँचागत सुविधाएँ बढ़ने, औद्योगिक विकास, टेक्नोलॉजी से युक्त बंदरगाहों का विकास होने से कच्छ में रिवर्स माइग्रेशन हो रहा है।

हस्तकला की कच्छी कारीगर श्री पाबीबेन को याद करते हुए श्री छांगा ने कहा कि एक समय हस्तकला तथा गृहोद्योग आधारित रोजगार देने वाला कच्छ हाल में गुजरात में उद्योगों का हब बनने जा रहा है। वाइब्रेंट के जरिये कच्छ में करोड़ों रुपए का निवेश हो रहा है और रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। उन्होंने नागरिकों तथा उद्योगपतियों से आर्थिक विकास के साथ ही नैतिक मूल्यों को बनाए रखते हुए तथा सामाजिक विकास को ध्यान में रखते हुए देश के विकास में सहभागी बनने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर कच्छ के सांसद श्री विनोदभाई चावडा ने कहा कि प्रधानमंत्री के दीर्घदृष्टिपूर्ण विजन से वाइब्रेंट गुजरात की शुरुआत हुई थी, जिसका लाभ कच्छ को मिलने से जिले में पोर्ट, मिनरल्स, केमिकल आदि क्षेत्रों में हजारों औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत हैं। आज कच्छ में रोजगार के विपुल अवसरों का सृजन होने से अन्य राज्यों के लोग यहाँ रोजगार के लिए आए हैं। इसे कच्छियों के लिए गौरव की बात बताते हुए श्री चावडा ने जोड़ा कि कच्छ गुजरात का एक मात्र जिला है, जिसे रण (रेगिस्तान), समुद्र तथा पर्वत का त्रिवेणी संगम मिला है। मुख्यमंत्री के अविरत प्रयासों से आज कच्छ कृषि, उद्योग एवं टूरिज्म क्षेत्रों में अग्रसर बना है। उन्होंने युवा उद्यमियों तथा निवेशकों से प्रधानमंत्री के मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल के विजन को सार्थक कर वाइब्रेंट कार्यक्रम में जुड़ने की अपील की। दीनदयाल पोर्ट के चेयरमैन श्री एस. के. सिंह ने कहा कि विकसित भारत के विजन में गुजरात राज्य तथा उसमें भी कच्छ जिला विशेष योगदान देगा। कच्छ की भौगोलिक स्थिति के कारण सभी प्रकार की कनेक्टिविटी उपलब्ध होने से निवेशक कच्छ के विकास में सहभागी होने को उत्सुक हैं। विकसित भारत के विजन में कच्छ में पोर्ट-मैरीटाइम सेक्टर का योगदान उल्लेखनीय रहेगा। उन्होंने जोड़ा कि कंडला पोर्ट ग्रीन हाइड्रोजन तथा शिप बिल्डिंग क्षेत्र में लीड कर रहा है। उन्होंने निवेशकों का आह्वान किया कि भविष्य में जब इन दोनों क्षेत्रों का विकास होगा, तब वे कच्छ में ग्रीन हाइड्रोजन पार्क में जुड़ें।

इस अवसर पर कच्छ जिला कलेक्टर श्री आनंद पटेल ने कहा कि विकसित भारत का सपना साकार करने की पहल में बीज के रूप में बोया गया वाइब्रेंट गुजरात आज वटवृक्ष बना है। जिला स्तरीय वाइब्रेंट कार्यक्रम के आयोजन तथा साथ ही वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस के आयोजन से औद्योगिक विकास को नई दिशा मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के विजन से एक समय का कच्छ आज लैंड ऑफ अपॉर्चुनिटी बना है।

गांधीधाम चैम्बर्स के अध्यक्ष श्री महेशभाई पुंज ने प्रसंगोचित संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री के विकास के विजन से कच्छ रिन्यूएबल एनर्जी, ग्रीन हाइड्रोजन, पोर्ट्स, केमिकल एंड मिनरल्स तथा टूरिज्म सहित महत्वपूर्ण सेक्टर्स में अग्रसर बन रहा है। विकास के साथ कच्छ में मिले महत्वपूर्ण अवसरों के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

डी. पी. वर्ल्ड के निदेशक श्री पराग कोचर ने ब्लू इकोनॉमी के महत्व के बारे में बताया और कच्छ में पोर्ट के विकास की अपार संभावनाएँ होने का उल्लेख करते हुए भारत-मार्ट के बारे में जानकारी दी।

किरी इंडस्ट्रीज के मनीष किरी ने कहा कि कच्छ गुजरात का आर्थिक पावर हाउस बन रहा है। ग्रीन हाइड्रोजन, डिजिटल स्ट्रक्चर, सी वॉटर, एग्रीकल्चर, एडवांस मरीन केमिकल मिनरल्स इंडस्ट्री के विकास से कच्छ की भूमि निवेशकों के लिए इंडस्ट्रियल लैंड बनकर उभरी है।

कच्छ मैनेजमेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री तेजाभाई कानगड ने कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन किया।

वाइब्रेंट कच्छ जिला कार्यक्रम में गांधीधाम चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स इवेंट पार्टनर के रूप में, जबकि दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट वेन्यू पार्टनर के रूप में जुड़ा। इसके अलावा फोकिया और कच्छ मैनेजमेंट एसोसिएशन नॉलेज पार्टनर के रूप में सहभागी हुए।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्री जनकसिंह जाडेजा, विधायक सर्वश्री केशूभाई पटेल, मालतीबेन महेश्वरी, प्रद्युम्नसिंह जाडेजा, अनिरुद्धभाई दवे, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. नीमाबेन आचार्य, अग्रणी श्री देवजीभाई वरचंद, श्री धवलभाई आचार्य, पूर्व कच्छ एसपी श्री सागर बागमार, गांधीधाम महानगर पालिका आयुक्त श्री मनीष गुरवानी, जीआरआईटी की जॉइंट सीईओ श्री स्तुति चारण, एआरएम श्री आशिष धानिया, संयुक्त उद्योग आयुक्त श्री कनक डेर सहित बड़ी संख्या में उद्योगकार तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे द्वारा वलसाड एवं हिसार के बीच स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से विशेष किराये पर चलने वाली वलसाड–हिसार साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन की फेरों को विस्तारित किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन संख्या 04728 वलसाड–हिसार स्पेशल को 29 जनवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04727 हिसार–वलसाड स्पेशल को 28 जनवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 04728 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 04 जनवरी, 2026 से सभी PRS काउंटरों तथा IRCTC की वेबसाइट पर उपलब्ध होगी। ट्रेनों के ठहराव समय तथा संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

उत्तरायण/मकर संक्रांति पर्व को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन द्वारा जनसमान्य से पटरियों के ऊपर लगे हाई वोल्टेज बिजली के तारों से दूर रहने की अपील

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के सभी खंडों में रेलवे लाइन के ऊपर 25,000 वोल्ट (25 kV) की ओवरहेड इलेक्ट्रिक (OHE) हाई वोल्टेज तारें लगी हुई हैं। यह अत्यंत जानलेवा हैं। यह देखा गया है कि उत्तरायण/मकर संक्रांति पर्व के दौरान पतंग उड़ाते समय पतंग की डोर (मांझा) इन हाई वोल्टेज तारों में उलझ जाती है। ऐसे मामलों में रेलवे कर्मचारी जब ट्रैक पर कार्य करते हैं, तो इन धागों के संपर्क में आने से गंभीर विद्युत झटके का खतरा बना रहता है, जिससे जान को भी नुकसान हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, कई बार आम नागरिक भी रेलवे ट्रैक के समीप पतंग उड़ाते हैं तथा ओवरहेड तारों में फंसी पतंग को निकालने का प्रयास करते हैं, जो अत्यंत खतरनाक और जानलेवा हो सकता है।

रेल प्रशासन सभी नागरिकों से अपील करता है कि सामाजिक हित को ध्यान में रखते हुए स्वयं सतर्क रहें तथा दूसरों को भी अधिक से अधिक जागरूक करें।

अहमदाबाद मंडल ने जनसामान्य के लिए चलाया सुरक्षा जागरूकता अभियान

उत्तरायण पर्व के दौरान रेलवे ट्रैक के आसपास एवं ऊपर से गुजरने वाली 25,000 वोल्ट की ओवरहेड इलेक्ट्रिक लाइनों से गंभीर दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। जनहित में रेलवे प्रशासन द्वारा आम नागरिकों को सुरक्षा संबंधी परामर्श (काउंसलिंग) दी जा रही है तथा आवश्यक सावधानियां अपनाने के लिए जागरूक किया जा रहा है।

अपनी एवं दूसरों की सुरक्षा हेतु कृपया निम्नलिखित सावधानियां अवश्य अपनाएं:

▸▸ रेलवे ट्रैक, ब्रिज, स्टेशन, पोल एवं ओवरहेड तारों से दूर पतंग उड़ाएं।

▸▸ रेलवे क्षेत्र में गिरी या फंसी हुई पतंग अथवा मांझा उठाने का प्रयास न करें।

▸▸ बच्चों पर विशेष ध्यान रखें और उन्हें रेलवे क्षेत्र से दूर रखें।

सुरक्षित रहें — जिम्मेदारी के साथ उत्तरायण मनाएं।

पुलिस मुठभेड़ में कुख्यात अपराधी मैनेजर राय घायल, हत्या और लूट के मामलों में था वांछित

(जीएनएस)। पटना। राजधानी पटना में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे सख्त अभियान के तहत गुरुवार देर रात खगौल थाना क्षेत्र में पुलिस और कुख्यात अपराधी मैनेजर राय के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में हत्या और लूट समेत कई संगीन मामलों में वांछित मैनेजर राय पुलिस की जवाबी कार्रवाई में गोली लगने से घायल हो गया। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया, जबकि पुलिस ने राहत की सांस ली है। वरीय पुलिस अधीक्षक कार्तिकेय के. शर्मा ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि लंबे समय से फरार इनामी अपराधी मैनेजर राय खगौल थाना क्षेत्र में अपने कुछ साथियों के साथ छिपा हुआ है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए पटना पुलिस ने बिहार विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के साथ संयुक्त रूप से ऑपरेशन की योजना बनाई और देर रात इलाके में घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया गया। पुलिस टीम जैसे ही संदिग्ध स्थान के पास पहुंची, मैनेजर राय ने खुद को घिरा हुआ देख भागने की कोशिश की। पुलिस के अनुसार, पीछा किए जाने पर उसने जान से मारने की नीयत से पुलिस बल पर फायरिंग शुरू कर दी। अचानक हुई फायरिंग से मौके पर अफरा-तफरी मच गई। स्थिति को नियंत्रित करने और आत्मरक्षा के तहत पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की, जिसमें मैनेजर राय के घुटने के नीचे गोली लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। घायल अवस्था में उसे तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया और प्राथमिक उपचार के बाद पटना एम्स रेफर किया गया। अस्पताल प्रशासन के अनुसार, अपराधी की हालत फिलहाल स्थिर है और डॉक्टरों की निगरानी में उसका इलाज चल रहा है। किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए एम्स परिसर में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया है।

पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक, मैनेजर राय एक शातिर और कुख्यात अपराधी है। उसके खिलाफ पटना और आसपास के जिलों में हत्या, लूट, रंगदारी, अवैध हथियार रखने और संगठित अपराध से जुड़े 20 से अधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस का कहना है कि वह कई आपराधिक गिरोहों के संपर्क में था और वारदात के बाद लगातार ठिकाने बदलकर पुलिस को चकमा दे रहा था।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ स्थल से एक अवैध हथियार, कारतूस और कुछ अन्य संदिग्ध सामान भी बरामद किए गए हैं। पूरे मामले की कानूनी प्रक्रिया के तहत जांच की जा रही है। जैसे ही मैनेजर राय की हालत में सुधार होगा, उससे पूछताछ कर उसके नेटवर्क, सहयोगियों और लंबित मामलों से जुड़ी अहम जानकारियां जुटाई जाएंगी।

पुलिस प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखने और आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपराधियों के खिलाफ अभियान आगे भी पूरी सख्ती के साथ जारी रहेगा। इस मुठभेड़ को पुलिस की बड़ी सफलता माना जा रहा है, क्योंकि इससे इलाके में लंबे समय से दहशत फैलाने वाला अपराधी पुलिस के शिकंजे में आ गया है।

प्रसव ऑपरेशन में पेट में छूटी कैंची बनी मौत की वजह, डेढ़ साल बाद महिला ने तोड़ा दम

(जीएनएस)। पूर्वी चंपारण। जिले में कथित चिकित्सकीय लापरवाही का एक हृदयविदारक और गंभीर मामला सामने आया है, जिसने स्वास्थ्य व्यवस्था पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। प्रसव के दौरान किए गए ऑपरेशन में पेट के भीतर कथित तौर पर कैंची छूट जाने का आरोप लगाते हुए परिजनों ने डॉक्टर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। लगातार डेढ़ साल तक दर्द झेलने के बाद गुरुवार को इलाज के दौरान महिला की मौत हो गई, जिससे इलाके में आक्रोश और तनाव का माहौल बन गया है। मृतका की पहचान जितना थाना क्षेत्र के झाझरा गांव निवासी मणिभूषण कुमार की 25 वर्षीय पत्नी उषा देवी के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार, करीब डेढ़ वर्ष पहले प्रसव पीड़ा होने पर उषा देवी को मोतिहारी के ज्ञानबाबू चौक स्थित एक निजी क्लिनिक में भर्ती कराया गया था। वहां कथित रूप से ऑपरेशन के जरिए बच्ची का जन्म कराया गया। परिजन बताते हैं कि ऑपरेशन के बाद से ही उषा देवी को पेट में लगातार दर्द रहने लगा, लेकिन इसे सामान्य पोस्ट-ऑपरेटिव समस्या बताकर नजरअंदाज कर दिया गया। परिजनों का कहना है कि बीते डेढ़ साल में महिला का कई जगह इलाज कराया गया। अलग-अलग डॉक्टरों को दिखाया गया, अल्ट्रासाउंड और अन्य जांचें भी कराई गईं, लेकिन किसी भी जांच में दर्द की असली वजह सामने नहीं आ सकी। दवाओं और इंजेक्शनों से कुछ समय के लिए राहत जरूर मिलती रही, मगर दर्द पूरी तरह खत्म नहीं हुआ। धीरे-धीरे महिला की हालत कमजोर होती चली गई और वह सामान्य घरेलू कामकाज करने में भी असमर्थ हो गई। कुछ दिन पहले अचानक पेट में तेज और असहनीय दर्द उठा, जिसके बाद परिजन उसे एक निजी चिकित्सक के पास ले गए। वहां डॉक्टर ने गंभीरता को देखते हुए एमआरआई जांच कराने की सलाह दी। एमआरआई रिपोर्ट सामने आते ही सभी के होश उड़ गए। जांच में महिला के पेट के अंदर एक कैंची होने का खुलासा हुआ। परिजनों का आरोप है कि यह वही कैंची है, जो प्रसव के दौरान किए गए ऑपरेशन में डॉक्टर से पेट के अंदर छूट गई थी। एमआरआई रिपोर्ट के आधार पर चिकित्सकों ने तत्काल ऑपरेशन कर कैंची निकालने की सलाह दी। इसके बाद उषा देवी को रहमानिया मेडिकल सेंटर में भर्ती कराया गया। परिजनों को उम्मीद थी कि अब वर्षों से चले आ रहे दर्द से राहत मिलेगी, लेकिन ऑपरेशन के दौरान ही महिला की हालत बिगड़ गई। डॉक्टरों ने काफी प्रयास किए, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। महिला की मौत की खबर मिलते ही अस्पताल परिसर में अफरा-तफरी मच गई। परिजन फूट-फूटकर रोने लगे और अस्पताल प्रशासन व संबंधित डॉक्टरों पर गंभीर आरोप लगाए। उनका कहना है कि अगर समय पर सही इलाज होता और ऑपरेशन के दौरान लापरवाही नहीं बरती जाती, तो उषा देवी की जान बचाई जा सकती थी। परिजनों ने इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषी डॉक्टर के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

वहीं, आरोपों में घिरी डॉक्टर संगीता कुमारी ने किसी भी तरह की चिकित्सकीय लापरवाही से इनकार किया है। उनका कहना है कि डेढ़ साल का लंबा समय बीत चुका है और इस दौरान मरीज का इलाज कई अन्य जगहों पर हुआ होगा। उन्होंने यह भी कहा कि बिना पूरी जांच के उन पर आरोप लगाना गलत है। हालांकि, परिजनों का आरोप है कि ऑपरेशन करने वाली डॉक्टर ही इस पूरे मामले की जिम्मेदार हैं। घटना के बाद गांव और आसपास के इलाकों में भारी आक्रोश देखा जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि निजी क्लिनिकों में बिना पर्याप्त निगरानी और जवाबदेही के ऑपरेशन किए जा रहे हैं, जिससे आम लोगों की जान जोखिम में पड़ रही है। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि ऐसे मामलों में सख्त कदम उठाए जाएं ताकि भविष्य में किसी और परिवार को इस तरह का दर्द न झेलना पड़े।

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल का दिसंबर 2025 में रिकॉर्ड परिचालन एवं वाणिज्यिक प्रदर्शन

अहमदाबाद मंडल ने दिसंबर 2025 में माल लोडिंग में भारतीय रेलवे में 7वां स्थान प्राप्त किया, दिसंबर 2025 में 5 मिलियन टन से अधिक रिकॉर्ड लोडिंग की एवं लगभग 885 करोड़ का राजस्व प्राप्त किया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने दिसंबर 2025 में परिचालन और वाणिज्यिक दोनों क्षेत्रों में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए माल ढुलाई, आय अर्जन तथा यात्री सेवाओं में अब तक के सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड स्थापित किए हैं। यह उपलब्धि मंडल की सतत योजना, परिचालन दक्षता, व्यवसाय विकास और कर्मचारी समर्पण का प्रतिफल है।

▸▸ दिसंबर 2025 में मंडल ने अब तक का सर्वाधिक औसत दैनिक माल लोडिंग 3,224.74 वैगन दर्ज किया, जो नवंबर 2024 में प्राप्त 3094.84 वैगन के पिछले रिकॉर्ड से अधिक है। मात्रा के लिहाज से भी मंडल ने 5.03 मिलियन टन का अब तक का सर्वाधिक मासिक माल लोडिंग हासिल किया, जो पूर्व के 4.81 मिलियन टन के रिकॉर्ड से अधिक है।

▸▸ क्षेत्रवार प्रदर्शन भी उल्लेखनीय रहा। गांधीधाम क्षेत्र ने 2,462.97 वैगन प्रतिदिन के औसत के साथ अब तक की सर्वाधिक लोडिंग दर्ज की, जबकि अहमदाबाद क्षेत्र

ने 761.77 वैगन प्रतिदिन का प्रदर्शन किया। गांधीधाम एरिया से अब तक के सबसे ज़्यादा इंडस्ट्रियल नमक के वैगन लोड किए गए दिसंबर 2025 में 4,797 वैगन, जो जुलाई 2025 के पिछले बेस्ट 4,522 वैगन से ज़्यादा हैं।

▸▸ वस्तुवार ढुलाई में सभी प्रमुख क्षेत्रों में वृद्धि दर्ज की गई। नमक की ढुलाई 373.84 वैगन प्रतिदिन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुँची, जो मंडल के इतिहास में सर्वाधिक है। इसके अलावा POL, उर्वरक, कोयला, कंटेनर, ऑटोमोबाइल एवं अन्य विविध वस्तुओं में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

▸▸ ट्रेन संचालन के क्षेत्र में मंडल ने 2,319 क्रैक ट्रेनें चलाईं, 86 लॉन्ग-हॉल ट्रेनों का परिचालन किया तथा मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों की समयपालनता 94.32% रही।

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने दिसंबर 2025 के दौरान दिसंबर 2024 की तुलना में वाणिज्यिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन दर्ज करते हुए माल, यात्री राजस्व, टिकट जांच, गैर-किराया आय तथा व्यवसाय विकास पहलों में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की है। दिसंबर 2025 में मंडल ने 884.89 करोड़ का कुल राजस्व अर्जित किया, जबकि दिसंबर 2024 में यह 702.35 करोड़ था। माल राजस्व 536.02 करोड़ से बढ़कर 701.39 करोड़ हो गया, जो वित्तीय वर्ष का अब तक का सर्वश्रेष्ठ मासिक माल प्रदर्शन है तथा निर्धारित लक्ष्य से भी अधिक है।

▸▸ यात्री राजस्व 167.00 करोड़ रहा, जबकि टिकट जांच से आय 2.10 करोड़ दर्ज की गई। इस अवधि के दौरान मंडल ने 35.77 लाख यात्रियों का परिवहन किया।

▸▸ बिजनेस डेवलपमेंट यूनिट (BDU) के केंद्रित प्रयासों से कई वस्तुओं में अब तक की सर्वाधिक आय दर्ज की गई, जिसमें फर्टिलाइजर (240.97 करोड़), कंटेनर ट्रैफिक (211.45 करोड़) तथा नमक (114.04 करोड़) शामिल हैं। गांधीधाम, मोथाला, शिरवा, सनोसरा एवं सामाखियाली जैसे माल टर्मिनलों ने भी अब तक की सर्वाधिक कमाई दर्ज की।

▸▸ 27 दिसंबर 2025 को 26.87 करोड़ का एकदिवसीय माल राजस्व वित्तीय वर्ष का सर्वश्रेष्ठ रहा। अहमदाबाद मंडल ने दिसंबर 2025 में माल लोडिंग में भारतीय रेलवे में 7वां स्थान प्राप्त किया।

▸▸ पार्सल, लीजिंग एवं गैर-किराया राजस्व क्षेत्रों में ई-नीलामी के माध्यम से कई परिसंपत्तियों का आवंटन किया गया, जिससे अनुबंध अवधि में 23.55 करोड़ की आय प्राप्त होगी। दिसंबर 2025 तक गैर-किराया आय 10.84 करोड़ रही, जो मंडल के इतिहास में सर्वाधिक है, और इसके साथ ही मंडल ने भारतीय रेल में 4वां स्थान प्राप्त किया।

▸▸ यात्री-केंद्रित पहलों के तहत कुल 41 विशेष ट्रेन फेरों का संचालन किया गया।

▸▸ यात्रियों की सुविधा के लिए कलोल स्टेशन पर 4 जोड़ी प्रमुख एक्सप्रेस ट्रेनों का अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया।

▸▸ टिकट जांच अभियानों को सुदृढ़ कर बिना टिकट/अनियमित यात्रा पर प्रभावी नियंत्रण किया गया।

▸▸ डिजिटल टिकटिंग को बढ़ावा देकर यात्रियों को सरल एवं पारदर्शी सेवा उपलब्ध कराई गई।

▸▸ कैटरिंग इकाइयों, OSOP स्टॉलों, पे-एंड-यूज़ शौचालयों, पार्किंग अनुबंधों एवं विज्ञापन पहलों के माध्यम से राजस्व में वृद्धि के साथ-साथ यात्री सुविधाओं में भी उल्लेखनीय सुधार किया गया।

पश्चिम रेलवे का ग्रांट रोड और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच 03/04 जनवरी, 2026 को मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। ब्रिज नंबर 5 के री-गर्डरिंग कार्य हेतु ग्रांट रोड और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच अप एवं डाउन स्लो लाइनों पर 13 घंटे का मेजर ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक शनिवार/रविवार, 03/04 जनवरी, 2026 को 23:00 बजे से 12:00 बजे तक रहेगा। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक अवधि के दौरान मुंबई सेंट्रल और चर्चगेट के बीच अप स्लो लाइन की सभी ट्रेनें अप फास्ट लाइन पर चलाई जाएंगी। इसी प्रकार, चर्चगेट और माहिम स्टेशनों के बीच डाउन स्लो लाइन की ट्रेनें डाउन फास्ट लाइन पर चलाई जाएंगी। प्लेटफॉर्म की अनुपलब्धता के कारण ये ट्रेनें महालक्ष्मी, प्रभादेवी एवं माटुंगा रोड स्टेशनों पर नहीं रुकेंगी तथा प्लेटफॉर्म की अपर्याप्त लंबाई के कारण लोअर परेल और माहिम स्टेशनों पर भी ठहराव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, ब्लॉक के दौरान कुछ उपनगरीय ट्रेनें निरस्त रहेंगी तथा चर्चगेट जाने वाली कुछ ट्रेनों को बांद्रा/दादर स्टेशन पर ही शॉर्ट टर्मिनेट अथवा रिवर्स किया जाएगा। उपरोक्त ब्लॉक के अतिरिक्त, प्रभादेवी स्थित आरओबी को हटाने के कार्य हेतु डाउन स्लो लाइन पर 23:30 बजे से 07:00 बजे तक 07:30 घंटे का एक और मेजर ब्लॉक लिया जाएगा। ब्लॉक अवधि के दौरान यात्रियों को बांद्रा/दादर से माहिम, माटुंगा रोड, प्रभादेवी, लोअर परेल एवं महालक्ष्मी स्टेशनों तक ऑपोज़िट दिशा में यात्रा करने की अनुमति होगी। उदाहरणार्थ, चर्चगेट आदि स्टेशनों से महालक्ष्मी, लोअर परेल एवं प्रभादेवी जाने वाले यात्री दादर स्टेशन पर उतरकर उसी टिकट पर ऑपोज़िट दिशा अर्थात अप स्लो लाइन से यात्रा कर इन स्टेशनों तक जा सकते हैं। इसी प्रकार, चर्चगेट आदि से माटुंगा रोड एवं माहिम जाने वाले यात्री बांद्रा स्टेशन पर उतरकर उसी टिकट पर ऑपोज़िट दिशा अर्थात अप स्लो लाइन से यात्रा कर सकते हैं। निरस्त की गई ट्रेनों की सूची अनुलग्नक–I में तथा आंशिक रूप से समाप्त/वापस चलने वाली (शॉर्ट टर्मिनेटेड/रिवर्स) ट्रेनों की सूची अनुलग्नक–II में दी गई है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी स्टेशन मास्टरों के पास भी उपलब्ध है।